CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य - रामप्रपन्नाचार्य

योगीन्द्रं प्रवर्तित विशाल द्वारकास्थ श्री श्रीमठ संस्थानिक

ज.गु.श्री रामानन्दाचार्य-पीठ

सचित्र धार्मिक मासिक

कार्यालय 卐 आचार्यपीठ श्री कोशलेन्द्रमठ सरखेजरोड
पो० पालडी अहमदाबाद ३८०००७

संरक्षक 卐 शेठ श्री अमरशी कुरजी मजिठिया

सम्पादक 卐 जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्यजी

सहसम्पादक 卐 पं. श्री शरचन्द्र शास्त्री

व्यवस्थापक 卐 म. म. स्वामी रामावतारदासजी (रत्न)

दिव्यदेहगुणाश्राय साञ्जनेयाय शेषिणे ।
सानुजाय ससीताय रामाय ब्रह्मणे नमः
(श्रौतप्रमेयचन्द्रिकातः)

वर्ष १५ विक्रमाब्द २०५० अङ्क ७

श्रीरामानन्दाब्द ६९३ सितम्बर १९९३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के आग्रही है । श्रीरामानन्दाचार्यजी का सिद्धान्त यहां सामान्य अर्थ ग्राहक है जो प्रकरण के अनुकूल है और श्रीरामानुजजी का सिद्धान्त यहां विशेष ग्राहक है जो न केवल प्रकरण के प्रतिकूल अपितु संकीर्ण भी । 'स्थैर्यम् की व्याख्या में श्रीरामानुजाचार्य जी ने 'स्थैर्यम् अध्यात्म शास्त्रोदितेषु अर्थेषु निश्चलत्वम्' और श्री रामानन्दाचार्यजी ने लिखा है—"स्थैर्यमात्मोपास्तौ दृढता' । इसमें भी दोनों के सिद्धान्तों में विरोध है । श्रीरामानुजाचार्यजी 'अध्यात्म शास्त्रो दितेषु' अर्थेषु को स्थैर्य कहते हैं और श्रीरामानन्दा-चार्यजी 'आत्मोपास्तौ' आत्मा की उपासना में निश्चलता को । शास्त्रों के विषय बहुत हो सकते हैं । शास्त्रोदितेषु अर्थेषु कहने से न तो किसी विषय का अविधान होता है और न निश्चय । पुनः यह अनपढ, अन्ध, मूक, बधिर आदि के लिये अनुपयोगी है, जबकि आत्मा का ज्ञान आचार्योपदेश से सभों को होता है । शास्त्र ज्ञान भी आचार्योपदेश निष्ठ ही है अतः लक्ष्य आत्मा की उपासना होने से श्रीरामानन्दाचार्यजी की व्याख्या ही सर्वोत्तम और साधु है । 'आत्मविनिग्रहः' की व्याख्या में श्रीरामानुजाचार्यजी ने लिखा है—'आत्मविनिग्रहः आत्मस्वरूप व्यतिरिक्त विषयेभ्यो मनसो निवर्तनम्' और श्रीरामानन्दाचार्यजी ने लिखा है 'बाह्यपदार्थेभ्यो मनोनिरोधः ।' इसमें भी दोनों में विरोध है । मूलपद आत्मविनिग्रहः का विग्रह आत्मानम् विनिग्रहः आत्मविनिग्रह है । विनिग्रह का विषय आत्म है । "आत्मा पुंसि स्वभावेऽपि प्रयत्नमनसोरपि । धृतावपि मनीषायां शरीर ब्रह्मणोरपि' अर्थों में विनिग्रह का विषय जीवात्मा और परमात्मा

शेष टा. नं· ३ में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

卐 त्रयोदशोऽध्यायः 卐

(क) भाष्यारम्भ के उपोद्घात में श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम षट्क के सम्बन्ध में श्रीरामानुजजी लिखते हैं–"पूर्वस्मिन् षट्के परम प्राप्यस्य परस्य ब्रह्मणो भगवतो वासुदेवस्य प्राप्योपायभूत भक्तिरूप भगवदुपासनाङ्गभूतं प्राप्तुः प्रत्यगात्मनो याथात्म्य दर्शनं ज्ञानयोग कर्मयोग लक्षण निष्ठा द्वय साध्यम् उक्तम् ''और श्री रामानन्दाचार्यजी लिखते हैं–"तत्र प्रथमषट्केन परभक्तेरुपाय भूताक्षरयाथात्म्यज्ञानाय ज्ञानगर्भितकर्मयोगमभ्यधात् ।' द्वितीय षट्क के सम्बन्ध में श्रीरामानुज जी लिखते हैं–''मध्ये च परम प्राप्यभूत भगवत्तत्त्व याथात्म्यतन्माहात्म्य ज्ञान पूर्वकैकान्तिकात्यन्तिक भक्ति योग निष्ठा प्रतिपादिता, अतिशयितैश्वर्यापेक्षाणाम् आत्म कैवल्य मात्रापेक्षाणां च भक्तियोगः तत्तदपेक्षितसाधनम् इति च उक्तम्' और श्रीरामानन्दाचार्यजी लिखते हैं–द्वितीयेन च परमपुरुषानुभव लक्षण मोक्ष साधनसमर्थं सपरिकर भक्ति योगं प्रत्यपीपदत् ।' तृतीय षट्क के सम्बन्ध में श्रीरामानुजाचार्यजी ने लिखा है–'इदानीम् उपरितन षट्के प्रकृति पुरुष तत् सर्गरूप प्रपञ्चेश्वरयाथात्म्य कर्मज्ञान भक्तिस्वरूप तदुपादान प्रकाराः च षट्क द्वयोदिता प्रकाराः च षट्क द्वयोदिता विशोध्यन्ते" और श्री रामानन्दाचार्यजी लिखते हैं–"एवं षट्क द्वयेय निखिलमप्यध्यात्म शास्त्र सम्पाद्य तत्र निर्दिष्टानामेव पदार्थानां संशोधनपरमिदं तृतीय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

षट्क मारभते ।' ईसी प्रकार प्रकृत तेरहवें अध्याय के आरम्भ के विषय में श्रीरामानुजाचार्यजी लिखते हैं–तत्र तावत्त्रयोदशे देहात्मनोः स्वरूपम् देहयाथात्म्य शोधनम् देहवियुक्तात्म प्राप्त्युपायः विवि-क्तात्म स्वरूप संशोधनम्, तथाविधस्य आत्मनः च अचित्सम्बन्ध हेतुः, ततो विवेकानुसंधान प्रकारः च उच्यते' और श्रीरामानन्दा चार्यजी लिखते हैं-'तत्रास्मिंस्त्रयोदशाध्याये प्रकृति परिणाम स्वरूपस्य शरीरस्य तदध्यक्षस्य जीवस्य स्वरूप स्वभावयो र्विवेकज्ञानमुपपा-दयति ।' इस प्रकार प्रथम षट्क में श्रीरामानुजाचार्यजी परमेश्वर के प्राप्ति का साधन भक्तिरूपभगवदुपासना का अङ्ग रूप जो प्राप्त कर्ता प्रत्यगात्मा का यथार्थ ज्ञान है उसकी प्राप्ति का साधन ज्ञानयोग और कर्मयोग दोनों निष्ठाओं को बतलाते है और श्री रामानन्दाचार्यजी परम भक्ति का उपाय अक्षर विषयक यथार्थज्ञान बतलाते हैं तथा उसकी प्राप्ति का साधन ज्ञानगर्भित कर्मयोग कहते हैं इसप्रकार श्रीरामानुजजी के मत में ज्ञान योग और कर्मयोग दोनों पृथक् पृथक् निष्ठायें अपेक्षित और उपदिष्ट है तथा श्रीरामानन्दा चार्यजी के मत में ज्ञानगर्भित कर्मयोग नामक संश्लेषित उभयात्मक योग । श्रीरामानुजजी के मत में प्रत्यगात्मा का यथार्थ दर्शन उपदिष्ट है और श्रीरामानन्दाचार्यजी के मत में अक्षर याथात्म्यज्ञान द्वितीय षट्क में । श्रीरामानुजजी के मतसे परम प्राप्यभूत भगवान् के स्वरूप का यथार्थ तत्त्व उसके माहात्म्य ज्ञानसहित ऐकान्तिक आत्यन्तिक भक्तियोगनिष्ठा का तथा अतिशय ऐश्वर्य की इच्छा करनेवालों एवं आत्मा की कैवल्यस्थिति की इच्छा करने वालों के लिये भी भक्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योग और उसके अपेक्षित साधन का प्रतिपादन हैं और श्रीरामानन्दाचार्यजी के मत में परमेश्वर की अनुभूति रूप लक्षण जो मोक्ष है उसका साधन भक्तियोग का सपरिकर प्रतिपादन है। इस प्रकार श्रीरामानुजजी के मत में श्रेय के साथ प्रेय के साधनों का भी प्रतिपादन है और श्रीरामानन्दाचार्यजी के मत में केवल श्रेय का, प्रेय का नहीं।

तृतीय षट्क में श्रीरामानुजजी के अनुसार प्रकृति और पुरुष, उन दोनों के संसर्गरूप प्रपञ्च, ईश्वर के यथार्थ स्वरूप, कर्म-ज्ञान भक्ति के स्वरूप और उनकी उत्पत्ति के प्रकार का वर्णन और उनका स्पष्टीकरण या निर्णय है और श्रीरामानन्दाचार्यजी के अनुसार इसमें निखिल अध्यात्म्य शास्त्र का सम्पादन दो षट्कों में करके इसमें उनका संशोधन (स्पष्टिकरण और निर्णय) किया गया है। इस प्रकार श्रीरामानुजजीने प्रपञ्च को प्रकृति पुरुष का संसर्ग कहा है (प्रकृतिपुरुष तत्संसर्गरूप प्रपञ्च) और श्रीरामानन्दाचार्यजी प्रकृति का परिणाम कहते हैं (प्रकृति परिणाम स्वरूपस्य शरीरस्य)। अतः दोनों में सैद्धान्तिक अन्तर और विरोध संसर्गवाद मिश्रणवाद, उपाधिवाद सामीप्यवाद आदि है और परिणामवाद सद्वारक परिणामवाद, अद्वारक परिणामवाद, अविकृत परिणामवाद, विकृत परिणामवाद तादात्म्य वाद, आदि। संसर्ग और परिणाम में भेद और विरोध है। संसर्ग व्यापार और क्रिया रूप है तथा परिणाम फलरूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वास्तविकता तो यह है कि श्रीरामानुजजी के इस संसर्गवाद से ही उनका सिद्धान्त विशिष्टाद्वैतवाद न होकर अपृथक् स्थितिवाद सिद्ध होता है और श्रीरामानुजजी के वेदान्त सिद्धान्त के सम्बन्ध में विविध मत है तथा कुछ लोग उनके मत को विशिष्टाद्वैत न मानकर भेदाभेद मानते हैं तो कुछ लोग उनके मत को विशिष्टाद्वैत न मानकर वास्तव में अपृथक् स्थिति वाद निश्चित करते हैं।

(ख) श्रीमानन्दाचार्यजी की श्रीमद्भगवद्गीता के तेरह अध्यायका प्रथम श्लोक है—"प्रकृतिं पुरुषं चैव क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेव च। एतद्वेदितुमिच्छामि ज्ञानं ज्ञेयं च केशव॥" और श्रीरामानन्दाचार्यजी ने इस श्लोक पर भाष्य लिखा है। प्रथम अध्याय के अर्जुन वाक्य दृष्ट्वेमं स्वजनं० १।२८ ४५, में अर्जुन की परिस्थिति का निरूपण, 'कुतस्त्वा० २।२-३' भगवद्वाक्य में भगवान् का दौर्बल्य त्याग का उपदेश। 'कथं भीष्ममहं० २।४—८ में अर्जुन का प्रश्न, अशोच्या० २।११—५३" में उक्त प्रश्न का उत्तर। 'स्थित प्रज्ञस्य० २।५४' अर्जुन का प्रश्न 'प्रजहाति० २।५५—७२' में उसका उत्तर। 'ज्यायसी० ३।१-२ में अर्जुन का प्रश्न और 'लोकेस्मिन्० ३।३-३५' में उसका उत्तर। 'अथ केन० ३।३६ में अर्जुन का प्रश्न 'काम एष० ३७-४३, ४।१-३ में उसका उत्तर। 'अपरं भवतो जन्म० ४।४' में अर्जुन का प्रश्न और बहूनि में ४।५—४२ में उसका उत्तर। 'संन्यासं० ५।१' में प्रश्न 'संन्यासं कर्मयोगश्च० ५।२-२९, ६।१-३१ में उत्तर। 'योऽयं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

योग:० ६।३३-३४ में प्रश्न 'असंशयं० ६।३५-३६' में उत्तर । अयति० ६।३७।३८में प्रश्न 'पार्थ नैवेह० ६।४०-४७, ७।१-३० में उसका उत्तर । 'किं ब्रह्म० ८।१-२ में प्रश्न 'अक्षरं ब्रह्मपरमं० ८।३-२८' ९।१-३४ ।०।१-११ में उसका उत्तर । 'परं ब्रह्म. १०।१२-१८ में प्रश्न और 'हन्त ते.१०।१९-४२ में उसका उत्तर ।'मदनुग्र.११।१-४' में प्रश्न 'पश्य मे.११।४-१२' में उत्तर । 'पश्यामि. ११।१५-३१ में अर्जुन की प्रार्थना 'कालो-ऽस्मि.११।३२-३४ में भगवान् का उपदेश 'एतच्छ्रुत्वा.११ ३५-४६ अर्जुन की प्रार्थना 'मया प्रसन्नेन. ११।४७-५०' में अर्जुन को धैर्यदेना । 'दृष्ट्वेदं.११।५१ में अर्जुन वाक्य सुदुर्द र्शमिदं.११।५२-५५ भगवान् का उत्तर । 'एवं सतत. १२।१' अर्जुन का प्रश्न और 'मय्या वेश्य.१२।३-२० में उसका उत्तर । इस प्रकार गीता के आरम्भ से बारहवें अध्याय के अन्ततक अर्जुन का प्रश्न और भगवान् का उसका उत्तर इस प्रश्नोत्तर क्रम से ही गीता का निरूपण हुआ है और बारहवें के अन्त सभी प्रश्नों के उत्तर के रूप में पूर्ण हो चुका है । अतः तेरहवें अध्याय के आरम्भ के लिये अर्जुन का कोई प्रश्न अत्यन्त अनिवार्य है और वह उपरोक्त श्लोक है, जो गीता प्रश्नोत्तर सिद्धान्तानु सार और स्वभाविक तथा अत्यन्त आवश्यक है । प्रश्न के अभाव में निर्मूल (मूलं नास्ति कुतः शाखा) वार्ता अनावश्यक और अस्व-भाविक होगी एवं शाण्डिल्य भक्ति सूत्र २३—प्रश्न निरूणाभ्याम्'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा ब्र.सू.१।४।१८ प्रश्नोत्तराभ्याम्, एवं ब्र.सू.३।१।१ प्रश्नोत्तराभ्याम्' के सिद्धान्त के विरुद्ध एवं 'नापृष्टः कस्यचिद् ब्रूयान्न चान्यायेन पृच्छतः। जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोकमाचरेत् ॥ २।११०॥' इस मनूक्त उपदेश का विघातक शिष्टाचार विरुद्ध भी होता। अतः तेरहवें अध्याय का यह श्लोक उचित और आवश्यक है। इस प्रकार दोनों के सिद्धान्तों में भेद और विरोध है। प्रकृत श्लोक विषयक विशेष चर्चा महामहोपाध्याय जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरघुवराचार्यजी कृत गीतार्थ चन्द्रिका में देखें।

१३।२ "इदं शरीरं...तद्विद... । इस श्लोक के इदं शरीरम् पद की व्याख्या में श्रीरामानुजाचार्यजी लिखते हैं–इदं शरीरं देवः अहम्, मनुष्यः अहम्, स्थूलः अहम्, इति आत्मना भोक्त्रा सह समानाधिकरण्येन प्रतीयमानं भोक्तुः आत्मनः अर्थान्तरभूतं तस्य भोगक्षेत्रम् इति शरीरयाथात्म्यविद्भिः अभिधीयते" और श्रीरामानन्दाचार्यजी ने लिखा है–"इदं जाति गुण क्रियादि भेदैर्भिन्नं भोक्तुर्जीवस्य भोगायतनतया पार्थक्येनावस्थितं शीर्यत इति शरीरं क्षेत्रं कर्मबीज प्रयोजनोत्पादकतया क्षेत्रमिव क्षेत्र मित्यभिधीयते 'एतदाश्रित्य जीवः कृषीबलवत् कर्मफलमुत्पाद्य भुंक्त इति भावः। एवञ्चात्र क्षतात् त्रायत इत्यार्थः प्रकृतानुपयुक्तत्वाद्धेयः तद्विद्भिरिति विभक्ति विपरिणामेनान्वयः।" उपरोक्त वाक्य खण्ड में प्रयुक्त शरीर और 'क्षेत्र' इन दोनों पदों में शरीर पद की व्याख्या में श्रीरामानन्दाचार्यजी ने शरीर पद के दो लक्षण भोगायतनं (आत्मनो भोगायतनं शरीरम्) और (२) क्षीयमाण शीर्यते प्रतिक्षणं इति शरीरम्), दिये हैं, जबकि श्रीरामानुजाचार्यजी ने केवल एक लक्षण 'भोगक्षेत्रम्' लिखा है। यह भोगायतनं एवं भोगक्षेत्रम् लक्षण चित् शरीर (यस्य आत्मा शरीरम्) का भी लक्षण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एतावता ब्रह्म के चित् शरीर का लक्षण है जबकि शीर्यते शरीरम् अचित् शरीर का ही लक्षण एतावता ब्रह्म और जीव–दोनों के ही शरीरों का लक्षण है जो श्रीरामानुज भाष्य में नहीं होने से अव्याप्त लक्षण है । इसी प्रकार 'क्षेत्रम्' पद की व्याख्या में श्री रामानुजाचार्यजी ने भोग को क्षेत्रम् कहा है जबकि श्रीरामानन्दाचार्यजी ने 'शरीरं क्षेत्रं कर्मबीज प्रयोजनोत्पादकतया क्षेत्रमिव क्षेत्रमित्यभिधीयते । एतदाश्रित्य जीवः कृषीबलवत् कर्मफलमुत्पाद्य भुंक्त इति भावः । एवञ्चात्र क्षतात् त्रायत इत्यार्थः प्रकृतानुपयुक्तत्वाद्धेयः तद्विद्धि रिति' लिखा है । इसप्रकार श्रीरामानन्दाचार्यजी ने न केवल कृषीक्षेत्र की समानता (सामान्य) लक्षण एवं 'क्षतात् त्रायत' के विभेदक लक्षण के द्वारा अव्याप्ति और अति व्याप्ति दोष युक्त क्षेत्र शब्द का लक्षण का प्रतिपादन किया है. जबकि श्रीरामानुजजी के लक्षण में 'क्षतात् त्रायत' इस अपेक्षित लक्षण का परिहार नहीं होने से निर्दुष्ट और उत्तम लक्षण नहीं है । इसी प्रकार 'क्षेत्रज्ञ' की व्याख्या में श्रीरामानुजाचार्यजी ने लिखा है–'एतद् अवयवशः संघातरूपेण च इदम् अहं वेद्मि इति यो वेत्ति तं वेद्य भूताद् अस्माद् वेदितृत्वेन अर्थान्तरभूतं क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः आत्मयाथात्म्यविदः प्राहुः । और श्रीरामानन्दाचार्यजी ने लिखा है–'एतदुक्त स्वरूपं क्षेत्रं यः पुमान् वेत्ति विवेकेनावगच्छति नाहं क्षेत्र मात्रं किंत्वस्माद्विलक्षणः । ननु अनुष्योऽहमित्यादिसमानाधिकरण्य प्रतीति रहमर्थेदमर्थयोरभेदमाचष्ट इति साम्प्रतम् 'मम देह' इत्यादि प्रबल प्रामाणिक प्रत्ययेन तद्बाधात् । तं तथा विधं देहात्म विवेक शालिनं तद्विदो देहि देहं विवेकाचरणाः क्षेत्रज्ञ इति प्राहुर्भोगायतनात् क्षेत्रात्तदधिष्ठातृतया तत्रोपलभ्यमानो जीवोऽत्यन्त विलक्षण एवेत्याशयः ।" श्रीरामानुजाचार्यजी ने 'देहः अहम् अनुष्यः अहम् स्थूलः अहम् कृशः अहम् इति आत्मना भोक्त्रा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

सह समानाधिकरण्येन प्रतीयमानं भोक्तु आत्मनः अर्थान्तरभूतं तस्य भोगक्षेत्रम्' में क्षेत्र और क्षेक्षज्ञ में सामानाधिकरण्य के आधार पर अपृथक्त्व प्रतीति बतलाते हैं, जबकि श्रीरामानन्दाचार्यजी इस सामानाधिकरण्य को मम देह इस सम्बन्धत्वेन बोधित प्रतिपादित करते हैं। इस प्रकार श्रीरामानुजजी के मतमें अपृथक् स्थिति है और श्रीरामानन्दाचार्यजी के मत में सान्निध्य और संयोग।

१३।३='क्षेत्रज्ञं...भारत' की व्याख्या में 'अपि' पद की व्याख्या में श्रीरामानुजाचार्यजी लिखते हैं–अपि शब्दात् क्षेत्रम् अपि मां विद्धि इति उक्तम् इति अवगम्यते'' और श्रीरामानन्दाचार्यजी "अपिना सन्निधानात् क्षेत्रमुच्यते' लिखा है। इस प्रकार श्रीरामानुजजी के मत में क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ में अपार्थक्य वा अपृथक् स्थिति है जबकि श्रीरामानन्दाचार्यजी के मत में दोनों में सन्निधान। निरुक्त ने भीअपि का अर्थ संसर्ग (अपीति संसर्गम् नि०१।१) ही कहा है। इसी प्रकार श्रीरामानुजजी ने इस अपृथक् स्थिति की सिद्धि में दो हेतु–(१) विशेषणतैकत्वभावतया और (२) तत्सामानाधिकरण्येन' उपस्थापित किये हैं–'यथा क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ विशेषणतैकस्वभावतया तदपृथक् सिद्धिः तत्सामानाधिकरण्येन एव निर्देश्यं, तथा क्षेत्रं क्षेत्रज्ञः च मद्विशेषणतैकस्वभावतया मद पृथक् सिद्धिः मत्सामानाधिकरण्येन निर्देश्यौ विद्धि'' और श्रीरामानन्दाचार्यजी ने इसके अतिरिक्त 'तदात्मत्व (क्षेत्र क्षेत्रज्ञयोः शरीरत्वं परमात्मनश्च तदात्मत्वमिति नियमात्) कहा है। अतः श्रीरामानुजाचार्यजी के अनुसार अपृथक् स्थिति वाद और श्रीरामानन्दाचार्यजी के अनुसार तदात्म्यवाद प्रतिपादित होता है। जैसे नीलोघटः में 'समवाय सम्बन्धावच्छिन्न नीलत्वनिष्ठ अवच्छेदकता निरूपित तादात्म्य सम्बन्धावच्छिन्न नील नीष्ठ प्रकारता निरूपित समवाय सम्बन्धावच्छि घटत्वनिष्ठ अवच्छेदकता निरूपित घट निष्ठ विशे-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ष्यता' तादात्म्यवाद है, जो श्रीरामानन्दाचार्यजी का सिद्धान्त है, और घटवद् भूतलम् में 'संयोग सम्बन्धावच्छिन्न घटत्वावच्छिन्न प्रकारता निरूपित सम्बन्धित्वा वच्छिन्न विशेष्यतावच्छिन्न प्रकारतानिरूपित भूतलत्वावच्छिन्न विशेष्यता निरूपक ज्ञान में संयोग सम्बन्धवाद वा अपृथक् स्थिति वाद है जो श्रीरामानुजाचार्यजी का सिद्धान्त है। श्रीरामानन्दाचार्यजी का सिद्धान्त चिदचित् विशेषणों का ब्रह्म निष्ठ विशेष्यता के कारण चिदचिद्विशिष्ट ब्रह्म अर्थात् विशिष्टाद्वैत वाद है और श्रीरामानुजाचार्यजी का चिदचिद् का ब्रह्म के साथ सामानाधिकरण्य के कारण अपृथक् स्थितिवाद संसर्गवाद और श्री रामानन्दाचार्यजी का तादात्म्यवाद। अचित् का चित् के साथ संसर्ग हो सकता है तादात्म्य नहीं और इसीप्रकार ब्रह्म के साथ भी संसर्ग हो सकता है—तादात्म्य नहीं। परन्तु चित् का ब्रह्मके साथ संसर्ग और तादात्म्य दोनों हो सकता है। इस प्रकार क्षेत्र के अचित् अंश के साथ ब्रह्म का संसर्ग और चित् अंश के साथ तादात्म्य भाव भी बनता है। श्रीरामानुजजी ने 'विशेषणैक स्वभावतया' हेतु दिया है उससे पार्थक्य ही सिद्ध होता है क्योंकि विशेषण भेद या पार्थक्य को इङ्गित करता है। इसी प्रकार 'सामान्याधिकरण्येन हेतु भी पृथक् देश स्थिति अर्थात् पृथक् स्थिति का ही प्रतिपादक है। क्योंकि चित् और अचित् का परस्पर विरोधी होने से न तो सामानाधिकरण्य (अन्यदुच्छृङ्खलं सत्त्वमन्यच्छास्त्र नियन्त्रितम्। सामानाधिकरण्यं हि तेजस्तिमिरयोः कुतः॥ शि०च० २।६२॥) परस्पर विरोधिन्योर्ह्येक संश्रय दुर्लभम्। संगतं श्री सरस्वत्योर्भूतयेऽस्तु सदा सताम्॥ विक्रमो० ५॥) ही बन सकता है और न तादात्म्य (परस्पर विरोधे हि न प्रकारान्तर स्थितिः। नैकताऽपि विरुद्धानामुक्तिमात्र विरोधतः। न्या.कु.३।८।९। सारतत्त्व जाति और उपजाति में तादात्म्य सम्बन्ध होता है जीवात्मा और परमात्मा में तादात्म्य है। अचित् और चित् एवं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अचित् और ब्रह्म में संयोग संसर्ग सम्बन्ध है तादात्म्य सम्बन्ध नहीं। अचित एवं चित, अचित् एवं ब्रह्म एवं चित् एवं ब्रह्म में साहचर्य है परन्तु नित्य साहचर्य नहीं। अचित् रहित चित् एवं चित् रहित अचित् की अवस्थाएं भी होती हैं। वहां साहचर्य का अभाव है। इसी प्रकार अचित् और चित विरहित देश में भी ब्रह्म की स्थिति होती है। इस प्रकार इन में सर्वत्र साहचर्य और सम व्याप्ति नहीं है। प्रत्युत विसम साहचर्य है अचित् और चित् का ब्रह्म में सामानाधिकरण्य तो है परन्तु चिदचिद् की एक देश स्थिति नहीं है अर्थात एक देश काल में जहां चित है वहीं अचित् भी नहीं है। अचित् और ब्रह्म में तादात्म्य सम्बन्ध हैं, या संसर्ग सम्बन्ध या कारण कार्य उपादान सम्बन्ध ? श्रीरामानन्द भाष्य में "व्यावृत्तिः स्वीकृता यस्माच्चिदचि त्तत्त्वयोर्मिथः। तयोर्विशेषणत्वं तद् व्यावर्त्तकतयाऽक्षतम् ॥' कहकर इस विषय को स्पष्ट किया गया है। श्रीरामानुजाचार्यजी समानाधिकरणता अन्तर्यामि रूप से सभी क्षेत्रज्ञों में आत्मरूप से भगवान् की स्थिति बतलाते हैं-'इदम् एव अन्तर्यामितया सर्वं क्षेत्रज्ञानाम् आत्मत्वेन अवस्थानं भगवत्सामानाधिकरण्येन व्यपदेशहेतुः। अहमात्मा गुडाकोश सर्वभूताशयस्थितः ।१०।२०। न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम ।१०।३९। विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ।१०।४२।इति। पुरस्ताद् उपरिष्टात् च अभिधाय मध्ये सामानाधिकरण्येन व्यपदिशति। आदित्यानामहं विष्णुः ।१०।२१ इत्यादि ना।' परन्तु समान अधिकरण का अर्थ-'वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृक्षः सदृशः सदृक्। साधारणः समानश्च-अ.को. २। १०।३६-३७॥ समानः सत्समैकेषु त्रिषु ना नामि मारुते। मे० ९३।४६।' अधिक्रियतेऽस्मिन्नत्यधिकरणम् आधारः।' है। श्रीरामानुजाचार्यजी का उपरोक्त अन्तर्यामी रूपेण सामानाधि करण्य समान शब्द के सत् अर्थ में ही सङ्गत है। चेष्टा का आश्रय शरीर है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चेष्टेन्द्रियार्थाश्रयः शरीरम्–न्या.सू. १।१।११' ज्ञान का आश्रय आत्मा है–'ज्ञानाधिकरणमात्मा । स द्विविधः, परमात्मा जीवात्मा चेति । त.सं. । अत्राधिकरण पदं समवायेन ज्ञानाश्रयत्व लाभार्थम् । न्या.वो. परमात्मत्वं समवाये न नित्यज्ञानवत्त्वम् । समवायेन जन्यज्ञानवत्त्वं जीवत्वम् पदकृत्य ।" अतः सामानाधिकरण्य विभिन्न अर्थों में घटित होता है । चिदचिद् ब्रह्म' अर्थात् चिदचिद् विशिष्ट ब्रह्म में परस्पर सम्बन्ध है सम्बन्ध का लक्षण 'सम्बन्धो हि स सम्बन्धिभ्यां भिन्नः, उभयाश्रितः एकश्च' किया जाता है । परन्तु ये सभी लक्षण संसर्ग (संयोग) सम्बन्ध में ही घटते हैं। परन्तु विशेष्य विशेषण भाव में न तो सम्बन्धिभ्यां भिन्नः घटता है और न उभयाश्रितः' और न 'एकः' ही घटता है । न्याय दर्शन अभावग्रहण में विशेष्य विशेषण सम्बन्ध मानते हैं। परन्तु चिदचित् ब्रह्म में विशेष्य विशेषण सम्बन्ध अभाव नहीं प्रत्युत भाव सम्बन्ध है । श्रीरामानुजाचार्यजी ने १ विशेषणतैक स्वभाव तया और २ तत्सामानाधिकरण्येन से केवल संसर्ग सम्बन्ध का प्रतिपादन किया है, वहां श्रीरामानन्दाचार्यजी ने उसके साथ तादात्म्य सम्बन्ध का भी प्रतिपादन किया है । जिसमें सम्बन्ध का एकः लक्षण घटता है क्योंकि तादात्म्य जाति और उपजाति और स्वगत (वृक्ष और उसकी शाखादि) में होता है जो एक है ।

१३।५–ऋषिभिर्बहुधा....हेतु मद्भिर्विनिश्चितैः' की ऋषिभिः पद की व्याख्या में श्रीरामानुजाचार्यजीने लिखा है 'ऋषिभिः पराशरादिभिः' और बहुधागीतम् की व्याख्या में विष्णु पुराण २।१३ ६९-७१, १०२, १०३' के वचन को उधृत किया है और श्रीरामानन्दाचार्यजी ने ऋषिभिः की व्याख्या में 'ऋषिभिर्वाल्मीकि पराशर व्यासादि महर्षिभिः' लिखा है और 'बहुधागीतम्' की व्याख्या में श्रीमद्वाल्मीकि रामायण का 'जगत्सर्वं शरीरं ते० वचन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को उधृत किया हैं । इस प्रकार श्रीरामानन्दाचार्यजी का सिद्धान्त श्रीराम का परत्व प्रतिपादक श्रीमद्वाल्मीकि रामायण की प्रधानता तथा इस श्रीमद्वाल्मीकि रामायण के उधृत वाक्य 'जगत्सर्वं शरीरं ते' को श्रुति वाक्य यस्य पृथिवी शरीरम् यस्यात्मा शरीरम् का अनुवाद एवं एक वाक्यता दर्शाते हुये श्रुति प्रमाण (प्रमाणं परमं श्रुतिः) अर्थात् परम प्रमाण रूप प्रतिपादित करना है । जबकि श्रीरामानुजजी का सिद्धान्त श्रीविष्णु 'श्रीनारायण' का परत्व प्रतिपादक श्रीविष्णु पुराण की प्रधानता प्रतिपादित करनो है । पुनः श्रीरामानन्दाचार्यजी ने 'पराशर व्यासादि महर्षिभिः' लिखकर अपने आचार्य परम्परा का सङ्केत किया है । जबकि श्रीरामानुजाचार्यजीने ऐसा नहीं किया है । 'छन्दोभिः विविधैः की व्याख्या में श्रीरामानुजजी ने लिखा है 'छन्दोभिः ऋग्यजुः साम्नाथर्वभिः और ऐतरेय उपनिषद २।१,४,५ वचन उधृत किया है । उन्हें उद्देश्य वचनानुसार ऋगादि वचन उपस्थापित करना चाहिए था परन्तु उन्होंने ऋगादि वचन उधृत ही नहीं किया है । इसके विपरीत श्रीरामानन्दाचार्यजीने 'द्वा सुपर्णा०ऋ. १।१६४ वचन उपस्थापित किया है और छा० ८।१३।३, श्वे०१।११ उपनिषद् वाक्य भी उपस्थापित किया है ।

१३।६ 'महाभूतान्यहं कारो०' के महाभूतानि की व्याख्या में दोनों में कोई अन्तर नहीं है । पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाश महाभूतानि श्रीरामानुजजी लिखते हैं और 'महाभूतानि पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशाख्यानि' श्रीरामानन्दाचार्यजी लिखते है । अहंकारः की व्याख्या श्रीरामानुजजी 'अहंकारो भूतादिः' लिखते हैं और श्रीरामानन्दाचार्यजी 'अहंकारस्त्रिविधः सात्त्विकादि भेदभिन्नः आकाशादेः कारणभूतः' लिखे हैं । इसमें विरोध तो नहीं क्योंकि श्रीरामानुज जी भी अहंकार को भूतों का आदि कारण (अहंकारो भूतादिः) ही कहे हैं । परन्तु श्रीरामानुजजी की यह व्याख्या उतना स्पष्ट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं हैं जितना श्रीरामानन्दाचार्यजी की उक्त इस सम्बन्ध में व्याख्या इसी प्रकार बुद्धि की श्रीरामानुजजी व्याख्या 'बुद्धिः महान् से श्रीरामानन्दाचार्यजी की व्याख्या 'बुद्धि रहंकार कारणं महत्तत्वम् विस्तृत स्पष्ट और पूर्ण परिघटक अहंकार के साथ सम्बन्ध की ज्ञापिका होने से उत्तम है। इसी प्रकार 'अव्यक्त' की व्याख्या श्रीरामानुजजी अव्यक्तं प्रकृतिः लिखे हैं और श्रीरामानन्दाचार्यजी की व्याख्या 'अव्यक्तं प्रकृति महतः कारणम् लिखकर इसे पूर्व परिघटक महत (बुद्धि) का कारण सम्बन्ध का ज्ञापिका है। इन्द्रियाणि दशैकं की व्याख्या में श्रीरामानुजाचार्यजीने श्रोत्रत्वक् चक्षुर्जिह्वाघ्राणानि पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि वाक्याणि पाद पायूपस्थानि पञ्चकर्मेन्द्रियाणि तानि एकम् इति मनः लिखा है और श्रीरामानन्दाचार्यजीने 'श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणाख्यानि पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि वाक् पाणिपायूपस्थाख्यानि पञ्च कर्मेन्द्रियाणि एकं मन उभयेन्द्रियानुग्राहकत्वादित्येकादशेन्द्रियाणि लिखा है। इस प्रकार श्रीरामानुजाचार्यजीने एकादश इन्द्रिय मन का कोई लक्षण नहीं दिया है। और श्रीरामानन्दाचार्यजी ने उभयेन्द्रियानुग्राहकत्व धर्म लक्षण से इसे साक्षात् इन्द्रिय नहीं बतलाकर इन्द्रियों का अनुग्राहक बतलाया है और सामान्य ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रियों से पृथक्। वैशेषिक दर्शन में नव द्रव्यों क्रिया गुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्य लक्षणम् वै. सू. १।१।१५) में नवम द्रव्य माना है और इन्द्रियों को कार्य द्रव्य रूप (शरीराश्रयं ज्ञातुरपरोक्ष प्रतीति साधनं द्रव्य मिन्द्रियम् पदार्थ धर्म संग्रहः। पञ्च इन्द्रिय गोचराः की व्याख्या में श्रीरामनुजजी इन्द्रिय गोचराः च पञ्च शब्दस्पर्शरूपरस गन्धाः" लिखा है और श्रीरामानन्दाचार्यजीने इन्द्रिय गोचराः शब्द स्पर्शरूप रसगन्धाख्याः पञ्च विषयाः' लिखा है। इसमें कोई विशेष भेद नहीं है। श्रीरामानुजजीने गोचराः का अर्थ विषयाः स्पष्ट नहीं किया है और श्रीरामानन्दाचार्यजीने स्पष्ट किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१३।७ इच्छा द्वेष० "इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं" की व्याख्या में श्रीरामानन्दाचार्यजीने 'इच्छा कामः' द्वेषः क्रोधः' सुखमनुकूलवेदनीयम' दुःखं प्रतिकूल वेदनीयम्' यह पद व्याख्या लिखी है। परन्तु श्रीरामानुजाचार्यजीने नहीं।

१३।८='अमानित्वम' पद की व्याख्या में श्रीरामानुजाचार्य जी ने लिखा है—अमानित्वम् उत्कृष्टजनेषु अवधीरणारहितत्वम' और श्रीरामानन्दाचार्यजी ने लिखा है—'अमानित्वमल्पेनापि गुणेन जननिचये महत्त्व रुचिर्मान स्तद् रहितत्वममानित्वम्'। इन दोनों में अन्तर ही नहीं अपितु विरोध भी है। श्रीरामानुजजी उत्कृष्ट जनेषु अवधीरणा (तिरस्कार बुद्धि) को 'मान' कहते है और श्री रामानन्दाचार्यजी 'अल्पेनापि गुणेन जननिचये महत्त्व रुचिर्मानः' कहते हैं। जो 'गर्वोऽभिमानो ऽहंकारो मानश्चित्त समुन्नतिः' कोषवचनानुकूल एवं निर्दुष्ट तथा व्यापक है। जबकि श्रीरामानुजजी का लक्षण अव्यापक एवं शब्दार्थ विरुद्ध है। दूसरों के प्रति तिरस्कार बुद्धि तो अनादर है। अपने प्रति पूज्य वा श्रेष्ठत्व बुद्धि मान है 'अनादरः परिभवः परीभाव स्तिर स्क्रियाः। अतः उत्कृष्ट जनेषु अवधीरण रहितत्त्वम् अमानित्वम्' निर्दुष्ट लक्षण नहीं है और इस विषय में दोनों में विरोध है 'अदम्भित्वं' पद की व्याख्या में श्रीरामानुजाचार्यजी लिखते हैं 'अदम्भित्वं धार्मिकत्व यशः प्रयोजनतया धर्मानुष्ठानं दम्भः तद्रहितत्वम्' और श्रीरामानन्दाचार्यजी लिखते हैं दम्भराहित्यमदम्भित्वम्' यहां श्रीरामानुजाचार्यजी ने धार्मिकत्व यशः प्रयोजनतया धर्मानुष्ठानं दम्भः' पदों की योजना से दम्भः शब्द के अर्थ को सङ्कीर्ण अर्थ में लिया है और श्रीरामानन्दाचार्यजी ने दम्भ शब्द को व्यापक अर्थ कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपद्य यदछद्म कैतवे। कुसृति निकृति शाठ्यं अ.को. १।७।२९' में ही ग्रहण किया है। यह दोनों में सिद्धान्त भेद है। प्रकरण के अनुसार भी इस गीता वाक्य में प्रयुक्तदम्भ शब्द का व्यापक शब्द कोशार्थ ही अपेक्षित है कोई सङ्कीर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थ विशेष नहीं । 'अहिंसा' पद की व्याख्या में श्रीरामानुजजी ने 'अहिंसा वाङ्मनः कायैः पर पीडा रहितत्वम्' लिखा और श्री रामानन्दाचार्यजी ने 'अहिंसा परोपकार चिकीर्षा' लिखा है । इस विषय में भी दोनों आचार्यों में मतभेद और विरोध है । श्री रामानुजाचार्यजी की अहिंसा निष्क्रियता या अभावात्मिका है जबकि श्रीरामानन्दाचार्यजी की अहिंसा भावात्मिका या क्रियाशीला । एक का लक्षण केवल अपकार नहीं करना रूप निषेध मात्र है और दूसरे को इसके साथ ही उपकार भी करना रूप विधिरूप भी । किसी को कष्ट नहीं देना मात्र ही पूर्ण अहिंसा नहीं है प्रत्युत किसी के कष्ट को देखकर उसके निवारण का प्रयास सह ही वह पूर्ण अहिंसा है । इस प्रकार अहिंसा का तात्पर्य कष्ट निवारण में है । क्षान्तिः' पद की व्याख्या में श्रीरामानुजाचार्यजी लिखते हैं–'क्षान्तिः परैः पीड्यमानस्य अपितान् अविकृतचित्तत्वम्' और श्रीरामानन्दाचार्यजी लिखते हैं–'क्षान्तिः सहनशीलता' । इस प्रकार इसमें भी दोनों में विरोध है । श्रीरामानुजाचार्यजी केवल पीड्यमान स्थिति में अविकृत चित्तत्व' को क्षान्तिः कहते हैं श्रीरामानन्दाचार्यजी सभी प्रकार के वेगों के सहनशीलता को,जिसे 'दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः' के साथ ही 'सुखेषु विगतस्पृहः' न द्वेष्टि के साथ ही 'न हृष्यति' अर्थात् 'हर्षामर्ष' के उद्वेगों की सहन शीलता को क्षान्ति कहते हैं । 'आर्जवं' पद की व्याख्या में श्री रामानुजाचार्यजी ने लिखा है–'आर्जव परान् प्रति वाङ्मनः काय वृत्तिनाम् एकरूपता' और श्रीरामानन्दाचार्यजी लिखे हैं–"आर्जव कौटिल्यरहितत्वम् इस प्रकार इस विषय में भी दोनों में विरोध है । 'परान् प्रति वाङ्मनः कायवृत्तिनाम् एक रूपता' लक्षण में आर्जव शब्द के न तो 'सरलता' अर्थ का ग्रहण होता है और न 'विनय' अर्थ का ही 'परान् प्रतिवाङ्मनः काय वृत्तिनाम् एक रूपता' में वृत्ति प्रकार का निर्देश नहीं होने से यह और भी अनर्थ कारी है । 'प्रवर्तनानुकूलो व्यापारो वृत्तिः' । यह प्रवृति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धर्माधर्मौ' (त.सं.दी.)' उभयात्मिका होती है । अतः यह आर्जव के लक्षण के अनुकूल नहीं है और श्रीरामानन्दाचार्य जी का लक्षण 'कौटिल्य रहितत्वम्' ही साधु लक्षण है ? 'आचार्योपासन्' की व्याख्या में श्रीरामानुजाचार्य जी ने लिखा है–'आचार्यो पासनम् आत्मज्ञानप्रदायिनि आचार्ये प्रणिपात परिप्रश्न सेवादि निरतत्वम्' और श्रीरामानन्दाचार्यजीने लिखा है-'आचार्यो पासनं सद्गुरुपरिचर्या 'आचार्य देवो भव इति श्रुतेः' । इस प्रकार इसमें भी दोनों में विरोध है । श्रीरामानुजाचार्य जी का आत्म ज्ञान प्रदायिनि आचार्ये प्रणिपात परिप्रश्न सेवा निरतत्वम' ज्ञान प्राप्त करने के साधन (उपाय) हैं जैसा कि गीता में ही पूर्वामें कहा गया है–'तद्विद्धि प्राणिपातेन परि प्रश्ने सेवया । उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्व दर्शिनः ॥ यह गीता के प्रकृत प्रकरण 'एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तम् १३।१४। ज्ञान तत्त्व नहीं ज्ञान (साध्य) नहीं है ज्ञान प्राप्योपाय है । परन्तु श्रीरामानन्दाचार्य जी का 'आचार्योपासन सद्गुरु परिचर्या' ज्ञान का विषय (अर्थ) है ज्ञान का साधन नहीं । पुनः श्रीरामानुजाचार्य जी का 'आचार्य' पद केवल आत्मज्ञानोपदेशक के लिये ही सीमित है जबकि श्रीरामानन्दाचार्य जी का आचार्य पद सीमित नहीं है वह मन्त्रोपदेश (मन्त्र व्याख्या कृदाचार्यः) आचारोपदेशक, भक्त्युपदेशक आदि सभी प्रकार के आचार्यों के अर्थों में व्यापक है केवल विद्योपदेशक मात्र के लिये सीमित नहीं 'शौचम्' की व्याख्या में श्रीरामानुजाचार्य जी ने लिखा है आत्म ज्ञान तत्साधन योग्यता मनोवाक्काय गता शास्त्र सिद्धा और श्री रामानन्दाचार्य जी लिखे हैं–"शौच मनोवाक्काय शुद्धिः' । इस प्रकार इसमें भी दोनों में भेद और विरोध है । श्रीरामानन्दाचार्य यहाँ प्रकृत प्रकरण में शौचम् पद से सामान्य अर्थ के आग्रही हैं और श्रीरामानुजाचार्य जी इसके साथ 'आत्मज्ञानसाधन योग्यता विशेषण जोडकर इसके उद्देश्य (प्रयोजन) को सीमित करने तथा 'शास्त्र सिद्धा' विशेषण जोड कर इसके स्वरूप को सीमित करने

शेष टा. नं. २ में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चाल्पीयस्त्वादेवेति बोध्यम् । वेदे त्रिवृत्करणोपदेशः पञ्चीकरणसप्तीकरयोरप्युपलक्षणम् ॥२२॥

॥ कालः ॥

भूतादिव्यवहारजनको गुणत्रयशून्यो जडद्रव्यविशेषः कालः । अखण्डकालोनित्योविभुपरिमाणश्च । निमेषादि रूपस्त्वनित्यः ॥२३॥

उक्तश्चाचित्तत्त्वमधिकृत्यापरबोधायनाचार्य जगद्गुरु श्रीदेवानन्दाचार्य वेदान्तविद्यानिधिभिः प्रमिताक्षराकारैर्योग पञ्चके—

का भी उपलक्षण बोधक है । त्रिवृत करण में ऊपर्युक्त पंचीकरण प्रणाली के अनुसार पृथिवी अप एवं तेज का संमिश्रण होता है तथैव सप्तीकरण में पृथिवी अप तेज वायु आकाश मन एवं बुद्धि का मिश्रण होता है ॥२२॥

भूत भविष्य वर्तमान दिन निमेष आदि व्यवहार का जनक कारण सत्व रज तथा तम तीनो गुणों से रहित जड द्रव्य को काल कहते हैं । खण्ड काल एवं अखण्ड भेद से काल दो प्रकार का होता है अखण्ड काल नित्य एवं विभु व्यापक परिमाण वाला होता है । निमेष मुहूर्त दिन पक्ष मास आदि खण्ड काल अनित्य होता है ॥२३॥

अचित् तत्त्व के प्रसंग में प्रमिताक्षरावृत्तिकार अपर बोधायनाचार्य जगद्गुरु श्रीदेवानन्दाचार्यजी वेदान्त विद्यानिधि ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In.Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"चिदात्माभिहितो द्रव्यं चतुर्धाऽचिदचेतनम् ।
जीवेशयोर्गुणो ज्ञानमर्थाभासोऽजडं विभु ॥१९॥
संकोच्यः कर्मणानित्योऽन्तरङ्गं भक्तिसाधनम् ।
शुद्धसत्वगुणा नित्यविभूतिरजडा मता ॥२०॥
कालवश्या तथा विभ्वी भोग्य भोगस्थलादिका ।
सत्वादिरहितः कालोविभुर्जडो हरे स्तनुः ॥२१॥
कालभिन्ना जडा नित्या प्रकृतिस्त्रिगुणाश्रया ।
तद्विकारो महानाद्यस्तद्भेदाः सात्विकादयः ॥२२॥

भी योग पंचक प्रबन्ध में कहा है—विशिष्टाद्वैत मतानुसार जीव ईश्वर प्रकृति काल नित्यविभूति एवं धर्मभूत ज्ञान छ द्रव्य माने गये हैं चित् पद से चेतन जोवात्मा तथा परमात्मा इन दो द्रव्य का बोध होता है अचित् पद से अचेतन प्रकृति काल नित्य विभूति तथा धर्मभूत ज्ञान इन चार द्रव्य का बोध होता है । जीव एवं ईश्वर ज्ञान गुण वाले हैं वह ज्ञान विभु अजड तथा अर्थ को प्रकाश करने वाला है ।१९। ईश्वर गत ज्ञान कर्म के अधीन न होने से नित्यतया व्यवहृत होता है कर्माधीन जीवगत होने से विभिन्न कार्य कलापतया संकोच एवं विकाश शाली होकर अनित्यरूपेण व्यवहृत होता है तथा अन्तरंग भक्ति का साधन हैं । शुद्ध सत्व गुण तथा नित्य विभूति अजड स्वयं प्रकाश माना गया है ।२०। शुद्ध सत्व एवं नित्य विभूति काल के अधीन नहीं होते हैं विभु हैं ईश्वर तथा नित्य मुक्तों के भोग्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सत्वादि गुणभेदेनाहङ्कारस्त्रिविधस्ततः ।
इन्द्रियाणि दशैकं च सात्विकाहंकृतेरथ ॥२३॥
तामसाहङ्कृतेश्चाथ राजससहकारतः ।
जायते शब्दतन्मात्रं स्पर्शहेतुस्ततो नभः ॥२४॥
स्पर्शाद्वायुस्ततो रूपं रूपात्तेजस्ततो रसः ।
रसादापस्तथा चाद्भ्यो गन्धो जाताक्षितिस्ततः ॥२५॥
तन्मात्रं द्रव्यरूपं चाद्रव्यं शब्दादयो गुणाः ।
शब्दादयो गुणाभिन्नाः शब्दादिकतन्मात्रतः ॥२६॥

एवं भोग स्थान रूप हैं । सत्वादि गुणों से रहित विभु जड एवं श्रीरामजी का शरीर स्वरूप काल है ।२१। सत्व रज एवं तम रूप तीनों गुणों का आश्रय रूप काल से भिन्न नित्य एवं जड रूपा प्रकृति है । उसी प्रकृति का पहला विकार महान् महतत्त्व है वह सात्विक राजस तथा तामस भेजसे तीन प्रकार का होता है ।२२। उसी महतत्त्व से अहंकार उत्पन्न होहा है जो सत्व गुण रजो गुण और तमो गुणों के भेद से तीन प्रकार का होता है । राजस अहंकार सहकृत सात्विक अहंकार से पांच ज्ञानेन्द्रिय पांच कर्मेन्द्रिय एवं उभयात्मक मन यों एकादश इन्द्रिय उत्पन्न होते हैं ।२३। राजस अहंकार के सहकार से तामस अहंकार से शब्द तन्मात्रा उत्पन्न होती है शब्द तन्मात्रा से आकाश उत्पन्न होता है आकाश से स्पर्श तन्मात्रा उत्पन्न होती है स्पर्श तन्मात्रा से वायु उत्पन्न होता है वायु से रूप तन्मत्रा उत्पन्न होती है उससे तेज उत्पन्न होता है तेज से रस तन्मात्रा उत्पन्न होती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पञ्चीकृत्य च भूतेभ्यो रामो जगत् करोति हि ।
स एव रक्षति तद् वत् प्रलयं विदधात्यपि ॥२७॥
पञ्चीकरणतः पूर्वा सृष्टिः समष्टिरुच्यते ।
उत्तरा व्यष्टिसृष्टिस्तु क्रियते ब्रह्मदेहिना ॥२८॥"
इति ॥२३॥

उक्तञ्च प्रकृतितत्त्वमधिकृत्याचार्यसार्वभौमैरानन्द-भाष्यकारैर्भगवद्भिः श्रीरामानन्दाचार्यैर्वेदान्तसारे—

है उससे जल उत्पन्न होता है जल से गन्ध तन्मात्रा उत्पन्न होती है उस से पृथिवी उत्पन्न होती है ।२४—२५। शब्द स्पर्श रूप रस एवं गन्ध के तन्मात्रा से शब्दादि गुण भिन्न हैं क्योंकि तन्मात्रा द्रव्य रूप हैं शब्दादि गुण अद्रव्य रूप हैं ॥२६। पृथिवो आदि पांचों भूमों का पंचीकरण कर के सर्व सर्जक सर्वेश्वर श्रीरामजी संसार की रचना करते हैं वेही रक्षा करते हैं एवं प्रलय भी वेही करते हैं ।२७। पंचीकरण से पहले की सृष्टि को समष्टि सृष्टि कहते हैं जिसे सत् संकल्प से सर्वेश्वर श्रीरामजी स्वयं करते हैं पंचीकरण के वाद की सृष्टि को व्यष्टि सृष्टि कहते हैं उसे ब्रह्म देहरूपी श्रीरामजी से किया जाता है ।२८। ॥२३॥

प्रकृति तत्त्व के निरूपण प्रसंग में आचार्य सार्वभौम आनन्दभाष्यकार भगवान् श्रीरामानन्दाचार्यजीने वेदान्तसार में इसी प्रकार कहा है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"पृष्टानामेकमाद्यं त्रिकमपि शृणु तद्भेदतो नाम भेदैः
नित्याऽज्ञाऽचेतनासाप्रकृतिरविकृतिर्विश्वयोनिः शुभैका ।

तत्वविषयक श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजी के प्रश्नों के उत्तर देने के लिये आचार्य प्रवर भगवान् श्रीरामानंदाचार्य जी कहते हैं कि—हे सुरसुरानन्द ! तुमने जो तत्वादि विषयक दश प्रश्नों को पूछा है उनमें से जो तुम्हारा प्रथम प्रश्न है अर्थात् तत्व क्या है ? इत्याकारक प्रश्न है, उसका उत्तर सुनो—तत्त्व को जानने वाले श्रीव्यास—पराशर वोधायन आदि महर्षियों ने ऐसा कहा है अर्थात् तत्त्व तीन प्रकार के होते हैं। अचित्=प्रकृति, चित्—चेतन बद्धादिक जीव समुदाय तथा सर्व जगत् के कारण सर्व शेषी परमेश्वर श्रीरामचन्द्रजी ये तीन प्रकार के तत्त्व शास्त्रों में श्रीपराशर व्यासादि के द्वारा प्रतिपादित हुये हैं। उन में जो प्रथम अचित् पदार्थ है वह नाम भेद से अर्थात् वाचक पद के भेद से नित्य उत्पाद विनाश रहित कहलाती है। अर्थात् परमेश्वर शेष होने से इसका आविर्भाव तिरोभाव नहीं होता, तथा इसको अज्ञा=ज्ञानभिन्न कहते हैं, अर्थात् ज्ञान का अधिकरण नहीं है जड है यह प्रकृति पदवाच्य सब का उत्पादक है, अविकृति हे विकार दोष रहित है अर्थात् उत्पन्ना नहीं होती है, विश्वयोनि है संपूर्ण जड जगत का कारण है नाना वर्ण वाली है अर्थात् शुक्लादि भेद से अनेक प्रकारक सरूप विरूप कार्यों का उत्पादक है। अजा है जन्मरूप विकार वर्जित है। त्रिगुणसुनिलया सत्वगुण रजस्तमोगुण का निदानस्थान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नानावर्णात्मकाजात्रिगुणसुनिलयाऽव्यक्तशब्दाभिधेया
निर्व्यापारापरार्थामहदहमितिसूरुच्यते तत्त्वविद्भिः"इति।२४।

इत्यनुभवानन्दद्वारपीठनामकश्रीरामानन्दाचार्यपीठसंस्थापकैर्जगद्
गुरुश्रीमदनुभवानन्दाचार्यैर्विरचितेश्रौतार्थसङ्ग्रहेऽचिदर्थ
निरूपणात्मको द्वितीयः परिच्छेदः ॥२॥

ॐ

श्रीरामः शरणं मम

है एवं अव्यक्त है चक्षुरादि इन्द्रियों से ग्राह्य होने वाली नहीं है, निर्व्यापार है जड होने से स्वतः व्यापार रहित है, परार्थ है जीव के भोगापवर्गरूप कार्य का संपादन करने वाली है। एवं महत्तत्व अहंकारादि लक्षण कार्य का संपादन करने वाली है। इस प्रकार तत्त्व घटक प्रथम अचित् पदार्थ का निर्वचन प्राचीनाचार्यों ने किया है ॥२४॥

इत्यानन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य
स्वामी रामेश्वरानन्दाचार्य प्रणीते श्रौतार्थ संग्रह
प्रकाशे
द्वितीय परिच्छेदः
श्रीरामः शरणं मम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

卐 ३ 卐

अथेश्वरार्थनिरूपणम्

ईश्वरस्तु विभुचेतनः । विशेषणानुपादाने जीवे विशेष्यानुपादाने कालेऽति प्रसङ्गवारणायोभयोपादानम् । तत्र चेतनत्वं नाम ज्ञानाधिकरणत्वम् । विभुत्वं तु स्वरूपतो ज्ञानतः शरीरतश्च व्यापकत्वम् ॥१॥

स ईश्वरः "सत्वादयोन सन्तीशे यत्र तु प्राकृता गुणाः" (वि.पु. १।९।४४) इति वचनप्रामाण्याद्धेयप्राकृतगुणरहितः

अब विशिष्टाद्वैत वेदान्त दर्शन हें प्रसिद्ध चित्–जीव तत्त्व अचित्–प्रकृतितत्व एवं ईश्वर तत्त्वों में से चित् तथा अचित् तत्त्वों को निरूपणकर तीसरे ईश्वर तत्त्व का निरूपण किया जाता है । विभु सर्व व्यापक होकर चेतन ज्ञान का आधार हो उसे ईश्वर कहते हैं । ईश्वर के लक्षण में विभुत्व यह विशेषण ईश्वर में न दें तो जीव में अतिव्याप्त होगा क्योंकि जीव भी चेतन है पर विभु नहीं । चेतनत्व विशेषण का उल्लेख न करें तो काल में अतिव्याप्त होगा क्योंकि काल विभु है पर चेतन नहीं । अतः जीव एवं काल में अति व्याप्ति दोष वारण के लिये विभु तथा चेतन दोनों पदों का प्रयोग किया है । चेतन उसे कहते हैं जो ज्ञान का अधिकरण आधार हो । स्वरूप से ज्ञान से शरीर से भी जो व्यापक हो उसे विभु कहते हैं ॥१॥

पूर्व वर्णित लक्षण वाला ईश्वर जिस ईश ईश्वर में सत्व रज एवं तम प्रभृति प्राकृतिक गुण नहीं हैं, इत्यादि विष्णु पुराण के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"परास्य शक्ति र्विविधैव श्रूयते। स्वाभाविकी ज्ञान बलक्रिया च" (श्वे० ६-८) इत्यादिश्रुतिप्रामाण्यान्निरूपाधिकानन्त कल्याणगुणविशिष्टः "आनन्दं ब्रह्म" "सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म" (तै०२-१) इत्यादिश्रुतेः सच्चिदानन्दरूपः, देशकाल वस्तुपरिच्छेदशून्यात्मकानन्तत्त्वविशिष्टत्वादनन्तः, ब्रह्म-शब्दवाच्यः "सदेव सौम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्" वचन प्रामाण्य से हेय त्याग करने योग्य प्रकृति संबन्धी गुणों से रहित है। इस परमात्मा श्रीरामचन्द्रजी की नाना प्रकार की शक्ति तथा स्वाभाविक परोपाधिक नहीं ज्ञान बल एवं क्रिया प्रभृति सूनी जाती है इत्यादि श्वेताश्वतर श्रुति के प्राभाण्य से निरुपाधिक किसी प्रकार के उपाधि से रहित अनन्त कल्याण गुणों से युक्त है। ब्रह्म आनन्द स्वरूप आनन्द गुण वाला है स्वरूप एवं गुण से भी विकार रहित सत्य स्वरूप ब्रह्म है नित्य असंकुचित ज्ञान वाला ब्रह्म है देश परिच्छेद काल परिच्छेद एवं वस्तु परिच्छेद से रहित ब्रह्म है इत्यादि तैत्तिरीय श्रुति के प्रामाण्य से सत् चित् एवं आनन्द रूप है। देश काल एवं वस्तु परिच्छेद से शून्य स्वरूप अनन्त से युक्त होने से अनन्त हैं एवं ब्रह्म शब्द से कथित है। सोम्य श्वेत केतु ! यह परिदृश्यमान विभक्त नाम एवं रूप वाला अनेक अवस्था वाला घट पट रूप आदि समस्त जगत् अग्रे सृष्टि काल से पहले एकम् एव अविभक्त नाम एवं रूप वाला होने से एकत्व अवस्था से ही युक्त होकर अद्वितीयम् कर्तृत्व तथा कारकान्तर से रहित सदेव सदाकारक प्रतीति का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(छा० ६।२।१) "यतोवा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि..." (तै० ३–१) इत्यादिश्रुतेरस्य जगतोऽभिन्न निमित्तोपादनकारणरूपो भुक्ति मुक्ति प्रदश्चास्ति ॥२॥

ईश्वरस्य जगदुपादानत्वस्वीकारे निर्विकारत्व प्रतिपादक श्रुतिविरोधस्तु न शङ्कनीयस्तत्र सद्वारकोपादानताया एव स्वीकारात् ॥३॥

विषय रूप से ही अखिल ब्रह्माण्ड नामक श्रीराम रूप से था। यतः जिस कारण रूप श्रीरामजी से ये परिदृश्यमान चराचर लक्षण भूत प्रभृति ब्रह्मा से लेकर तृण पर्यन्त उत्पन्न होते हैं जिससे समुत्पन्न चराचर सभी प्राणि समूह जीते हैं एवं जिस में प्रलय काल में प्रविलीयमान होते हैं संसार का अभिन्ननिमित्तोपादान कारण पर ब्रह्म श्रीराम है उसे जानो इत्यादि छान्दोग्य एवं तैत्तिरीय श्रुतियों के अनुसन्धान से इस संसार का अभिन्न निमित्त तथा उपादान कारण स्वरूप भुक्ति एवं मुक्ति को प्रदान करने वाले ईश्वर सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी ही हैं अन्य नहीं ॥२॥

ईश्वर को संसार का उपादान कारण स्वीकार करने से ब्रह्म को निर्विकार रूप से प्रतिपादन करने वाली श्रुति से विरोध होगा ऐसी शंका यहां नहीं करनी चाहिये क्योंकि ईश्वर में जो उपादानता मानी गई है वह सद्वारक यानी विशेषण अंश में ही अर्थात् ब्रह्म का विशेषणभूत प्रकृति अंश में ही संसार की उपादानता स्वीकृत है विशेष्य रूप ईश्वर में नहीं ॥३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उक्तं च जगद्गुरुभिः श्रीश्रुतानन्दाचार्यैः—

"विकारञ्च रामोदयाब्धिस्तथात्वे
दयाशून्यतां पक्षपातं च नैति ।
प्रकारे विकारस्तथा चित्रसृष्टौ
च हेतुर्यतः प्राणिनां प्राच्यकर्म" इति ॥४॥

"रमन्ते योगिनो यस्मिन् सत्यानन्दे चिदात्मनि ।
इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते" (श्रीरामतायनीयः)
इतिश्रुतिप्रामाण्याद् ब्रह्मपदाभिधेयः स चेश्वरः श्रीराम एव ।५।

श्रौतसिद्धान्त विन्दु के आठ वें श्लोक में जगद्गुरु श्रीश्रुतानन्दाचार्यजी ने इस तथ्य का निरूपण किया है श्रीरामचन्द्रजी के प्रकार विशेषण रूप प्रकृति में विकृति होकर सृष्टि होती है एवं प्राणि वर्ग के पूर्वकर्मानुसार नाना प्रकार की सृष्टि की जाती है इसलिये दया के सागर श्रीरामजी में दया शून्यता तथा विकारिता सम्बन्धी दोषों का संश्लेष नहीं होता है इस श्लोक का विशेष विवरण मेरे सम्पूर्ण प्रबन्ध व्याख्यान में देखें ॥४॥

जिस सत् चित् एवं आनन्द स्वरूप सर्वरमणशील परतत्त्व में योगिजन सदारमण करते हैं इस श्रीराम पद से सभी को रमाने या निरतिशय आनन्द प्रदान करने वाले पर ब्रह्म का बोध होता है, इस श्रीरामतापनीय श्रुति के प्रमाण से ब्रह्म पद से कथित ईश्वर है वह श्रीरामजी ही हैं अन्य नहीं ॥५॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"ज्ञानशक्तिबलैश्वर्यवीर्य तेजांस्यशेषतः ।
भगवच्छब्दवाच्यानि विनाहेयैर्गुणादिभिः"
(वि. पु. ६।५।७९)
"तत्र पूज्यपदार्थोक्तिपरिभाषासमन्वितः ।
शब्दोऽयं नोपचारेण त्वन्यत्र ह्युपचारतः'
(वि. पु. ६।५।७७)

इत्यादिवचनप्रामाण्याद्भगशब्दवाच्यज्ञानशक्तिबलैश्वर्य वीर्यतेजो रूपषड्विधैश्वर्यशालित्वात् स हि भगवच्छब्द वाच्यश्च ॥६॥

उक्तं च बोधायनवृत्तिकारस्य श्रीपुरुषोत्तमाचार्यस्य शिष्यवर्यैः श्रीगङ्गाधराचार्यैः—

सर्वथा त्याग करने योग्य सत्व रज तथा तमोगुणों एवं उन से जाय मान क्लेश आदि को त्यागकर ज्ञान शक्ति बल ऐश्वर्य वीर्य तथा तेज प्रभृति सद्गुण ही 'भगवत्' शब्द से कहे जाते हैं पूजनीय पदार्थों को बोध कराने के लिये सत् लक्षण से युक्त इस 'भगवान्' शब्द का प्रयोग परमात्मा में मुख्य रूप से अन्यत्र इस शब्द का प्रयोग गौणरूप से होता है मुख्य नहीं इत्यादि विष्णुपुराण वचनों के प्रामाण्य से 'भग' शब्द से वाच्य—मुख्य रूप से कथित ज्ञान शक्ति बल ऐश्वर्य वीर्य एवं तेज स्वरूप छ प्रकार के ऐश्वर्यों से युक्त हैं इस लिये वह ईश्वर श्रीरामजी हैं एवं भगवत् शब्द से वाच्य कथित सभी शास्त्रों में श्रीराम चन्द्रजी ही हैं ॥६॥

बोधायन वृत्तिकार श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी के सत् शिष्य श्रीगंगा धराचार्यजीने भी श्रीराम भगवत्त्व नामक प्रबन्ध में पूर्वोक्त रूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"ज्ञानशक्तिबलैश्वर्यवीर्यतेजांसि षड्गुणाः ।
भगत्वेनेरिताः सन्ति श्रीरामे भगवान् स तत् ॥
श्रीरामे भगवच्छब्दो मुख्यवृत्त्या प्रवर्त्तते ।
गौण एव स चान्यत्र षड्विधैश्वर्यलेशतः"
(श्रीरामभगवत्त्वम्) इति ॥७॥

"नित्योनित्यानाम्" (क॰ २।२।१३) इत्यादिश्रुतिप्रामाण्यात् स चेश्वरो नित्यः "यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णं

से ही वर्णन किया है शास्त्रों में भग शब्द से वर्णित ज्ञान शक्ति बल ऐश्वर्य एवं तेज ये छ गुण श्रीरामजी में हैं अतः श्रीरामचन्द्रजी भगवान् हैं । सर्वेश्वर श्रीरामजी में पूर्णतः छ प्रकार के ऐश्वर्य होने से भगवत् शब्द मुख्य वृत्ति से प्रयुक्त होता है अन्यों में भगवान् शब्द का प्रयोग षड्विध ऐश्वर्य के लेश मात्र के होने से भी हो रहा है अतः भगवत् शब्द के वाच्य श्रीराम जी हैं वेही ईश्वर शब्द से वेदान्त शास्त्रों में निरूपित हैं ।७।

सभी शास्त्रों में नित्य रूप से वर्णित जीवात्माओं से भिन्न तथा स्थिति एवं प्रवृत्ति के रूप में नित्यतया अविनाशीरूप से प्रसिद्ध इत्यादि कठोपनिषद् वचन के प्रामाण्य से वह ईश्वर नित्य है । जब जीवात्मा सुवर्ण के समान वर्ण वाले कर्ता निमित्तकारण एवं योनि उपादान कारणभूत स्वरूप एवं गुण से भी सर्वतोभाव से वृहत स्वरूप वाले ईश सर्व नियन्ता परपुरुष उपाधि रहित पुरुष पद से कथित परमात्मा श्रीरामजी को देखता है इत्यादि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम्" (मु० ३।१।३) इत्यादिश्रुतेर्दिव्यमङ्गलविग्रहश्चास्ति ॥८॥

अत एवोक्तं भगवद्भिरामानन्दभाष्यकारैः श्रीरामानन्दाचार्यैराचार्यसार्वभौमैः—"अत एव श्रुत्युपबृहणीभूतेतिहास पुराणादिषु बहुशस्तत्र तत्र भगवतो दिव्यमङ्गलविग्रहस्योपवर्णनं सङ्गच्छते" (आनन्दभाष्यम् १।१।२१) इति ॥९॥

स च सर्वेश्वरो भगवान् श्रीरामः परव्यूहविभवान्तर्याम्यर्चावताररूपेण पञ्चधास्थितः । तथा चागमः—

"मम प्रकाराः पञ्चेति प्राहुर्वेदान्तपारगाः ।
परो व्यूहश्च विभवोनियन्ता सर्वदेहिनाम् ॥

श्रुति वचनों के अनुसन्धान से वह ईश्वर दिव्य मंगल विग्रह—दिव्य शरीर एवं मंगलमय शरीर वाला है ऐसा बोध होता है ॥८॥

भगवान् के दिव्य मंगलमय विग्रह के विषय में भगवान् आनन्दभाष्यकार श्रीरामानन्दाचार्य जी आचार्य सार्वभौम जीने आनन्दभाष्य में कहा है—इसीलिये श्रुति के अर्थ का उपबृंहक—वर्धक इतिहास पुराण स्मृति आदि में उन उन स्थानों में विस्तार पूर्वक भगवान् के दिव्य मंगल विग्रह का वर्णन संगत होता है ॥९॥

वह पूर्वोक्त रूप से वर्णित सर्वेश्वर भगवान् श्रीरामजी पर व्यूह विभव अन्तर्यामी एवं अर्चावतार के भेद से पांच प्रकार से अवस्थित हैं इस विषय को पांचरात्र आगम के विष्वक्सेन नामक संहिता में लिखा है—वेदान्त तत्त्व के पारगामी साधक लोग मेरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्चावतारश्च तथा दयालुः पुरुषाकृतिः ।
इत्येवं पञ्चधा प्राहुर्मां रहस्य विदोजनाः" इति ॥१०॥

(विष्वक्सेनसंहिता) समुदीरितञ्चैतदीश्वरतत्त्वमधिकृत्य प्रमेयोद्देशभास्करेसिद्धान्तवाचस्पति जगद्गुरु श्रीचिदानन्दाचार्यैः—

"रामश्च ब्रह्मकर्ता हि विष्णुत्वमुपजग्मिवान् ।
परव्यूहादि रूपेण सीतानाथश्च पञ्चधा ॥७४॥

भगवान् के पांच प्रकार वतलाये हैं पर व्यूह विभव सभी का नियन्त्रक अन्तर्यामी एवं परमदयालु पुरुषाकृति वाले अर्चावतार इस प्रकार रहस्य को जानने वाले लोग भगवान् का स्वरूप को पांच प्रकार से वर्णन किये हैं ॥१०॥

इसी प्रकृत ईश्वर तत्त्व के विषय में सिद्धान्तवाचस्पति जगद्गुरु श्रीचिदानन्दाचार्यजीने प्रमेयोद्देशभास्कर में कहा है—"रक्षां विधास्यन् भूतानां विष्णुत्वमुपजग्मिवान्" (श्रीमद्रामायण ७।१०४।९) इस महर्षि के वचनानुसार सर्वभूतों के रक्षा हेतु सर्वेश्वर श्रीरामजीने विष्णु स्वरूप को धारण किया वे ही श्रीरामचन्द्रजी "यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वम्" इस श्वेताश्वतर श्रुति के अनुसार सृष्टि के आदि में ब्रह्माजी की सृष्टि किये उन्ही श्रीसीतानाथजीने अलग अलग कार्य सम्पादनार्थ पर व्यूह विभव अन्तर्यामी एवं अर्चावतार रूप से पांच प्रकार से अपने स्व रूप को विभक्त किया ।७४। इन पांच प्रकार के स्वरूपों में पर वह कहलाता है जो परात्पर नित्य लोक दिव्य धाम श्रीसाकेत में विराजमान है एवं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परश्च परलोके हि साकेते सोऽधिराजते ।
दिव्यदेहगुणोनित्योदिव्यशस्त्रास्त्राभूषणः ॥७५॥
अनन्तकरुणावत्या सीतया जगदम्बया ।
सिंहासने समासीनो दिव्ये दिव्यपुरे परे ॥७६॥
सर्वज्ञः सर्वशक्तिश्च भगवान् करुणाम्बुधिः ।
नित्युमुक्तैः स्तुतश्चाथ वेदवेद्यः परात्परः ॥७७॥

नित्य अविनाशी है दिव्य देह तथा दिव्यगुणों से युक्त हैं और दिव्य शस्त्र दिव्य अस्त्र एवं दिव्य आभूषणों से सदा अलंकृत रहते है । तथा परात्पर दिव्यपुर श्रीअयोध्या में अतिदिव्यसिंहासन में अनन्त करुणा वाली जगदम्बा अपने से अभिन्न स्वरूपा सर्वेश्वरी श्रीसीताजी के साथ विराजमान है । और वे परात् पर ब्रह्म तत्त्व है वेद से वेद्य जाने जाने वाले है सर्वज्ञ है सर्व शक्ति सम्पन्न है उत्पत्ति प्रलय अगति गति विद्या एवं अविद्या रूप षडैश्वर्य शाली होने से भगवान् कहलाते है और करुणा के समुद्र है नित्य मुक्त श्रीहनुमान् आदि अनन्त साधकों से सदा संस्तुत है ।७५-७६-७७। सृष्टि पालन एवं संहार प्रभृति कार्यों को सम्पादन करने के लिये वे ही श्रीरामजी व्यूह रूप को धारण करलेते है वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न एवं अनिरुद्ध के प्रभेद से चार प्रकार का व्यूह माना गया है ।७८। इन में प्रथम व्यूह श्रीवासुदेवजी से केशव नारायण एवं माधव ये तीन व्यूह होते है । तथा श्रीसंकर्षणजी से गोविन्द मधुसूदन एवं विष्णु ये तीन व्यूह होते है ।७९। तथैव श्रीप्रद्युम्नजी से ऋषिकेश पद्मनाभ एवं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यूहतां याति श्रीरामः सृष्ट्याद्यर्थमुपासितुम् ।
चुतुर्धा च मतो व्यूहो वासुदेवादिभेदतः ॥७८॥
वासुदेवात् त्रिधा व्यूहा भवन्ति केशवादयः ।
सङ्कर्षणाच्च गोविन्दादयस्त्रिधा भवन्ति हि ॥७९॥
प्रद्युम्नाच्च त्रिधा व्यूहा ऋषिकेशादयो मताः ।
भवन्त्यथानिरुद्धाच्च त्रयः श्रीवामनादयः ॥८०॥
रामः सर्वावताराणामवतारी समीरितः ।
परित्राणं च साधूनामवतारप्रयोजनम् ॥८१॥

दामोदर ये तीन व्यूह होते है । और श्रीअनिरुद्धजी से वामन श्रीधर एवं त्रिविक्रमये तीन व्यूह होते है ।८०। सर्वेश्वर श्रीराम चन्द्रजी सभी अवतारों के अवतारी के स्वरूप में "सर्वेषामवताराणामवतारीरधूत्तमः" इस प्रकार से आगमशास्त्रों में अच्छी प्रकार से वर्णन किया गया है श्रीरामजी के अवतार का मुख्य प्रयोजन साधुओं का संरक्षण एवं अधर्मियों का मर्दन तथा वैदिक धर्म संरक्षण है ।८१। हे सर्व शरण्य श्रीराम ? मैं आप श्री के शरण में आया हूं मेरी रक्षा करें' इस प्रकार एक ही वार सर्वतोभाव से श्रीरामजी की प्रपत्ति स्वीकार करने वाले साधक को सर्वेश्वर श्रीरामजी सभी भूत प्राणि वर्ग से सदा के लिये अभय प्रदान करते हैं अपने शरण में आये साधक के अपराधों को शरणागत वत्सल श्रीराम स्मरण नहीं करते हैं प्रत्युत उस प्रपन्न के सभी अपराधों को क्षमा कर सदा के लिये निर्भय कर देतेहैं । ।८२। साक्षात् अवतार गौण अवतार एवं आवेश अवतार के भेद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्वेभ्यश्चाभयं दत्ते रामः सकृत् प्रपत्तितः ।
स्वाश्रितस्यापराधांश्च रामः स्मरति नैव हि ॥८२॥
साक्षाद् गौणास्तथाऽऽवेश इत्येवं विभवास्त्रिधः ।
मुख्यमुख्यतरत्वादि भेदात् साक्षात् त्रिधा मतः ॥८३॥
नृसिंहवामनभेदाद्द्विधा मुख्यः प्रकीर्तितः ।
मुख्यतरश्च श्रीकृष्णो रामो मुख्यतमस्तथा ॥८४॥
मत्स्यकूर्मादिभेदैश्च मतो गौणास्त्वनेकधा ।
कलास्वरूपशक्तीनामावेशात् त्रिविधोऽन्तिमः ॥८५॥
विभवाश्च कलावेशात् पृथुधन्वन्तरादयः ।
शुद्धावेशस्तथाऽशुद्धावेशोद्विधा च मध्यमः ॥८६॥

से विभव अवतार तीन प्रकार के होते है। उन में से मुख्य मुख्यतर एवं मुख्यतम के भेद से साक्षात् अवतार तीन प्रकार का शास्त्र कारों ने माना है मुख्य अवतार श्रीनृसिंहावतार तथा श्रीवामनावतार के भेद से दो प्रकार का माना गया हैं, मुख्यतर श्रीकृष्णावतार है एवं मुख्यतम श्रीरामावतार है ।८३–८४। मत्स्य कूर्म बाराह संकर्षण भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न रामानन्दाचार्य कल्कि आदि के भेद से गौण विभवावतार अनेक प्रकार का माना गया है। कला का आवेश स्वरूप का आवेश तथा शक्ति की आवेश के भेद से आवेशावतार तीन प्रकार का है ।८५। पृथु तथा धन्वन्तरि विभव के कलावेश के अवतार हैं। शुद्ध आवेश तथा अशुद्ध आवेश के भेद से स्वरूपावेश दो प्रकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुद्धावेशाश्च विज्ञेयाः श्रीव्यासकपिलादयः ।
मता परशुरामादावशुद्धावेशिता बुधैः ॥८७॥
शक्त्यावेशो द्विधा शुद्धाशुद्धत्व भेदतो मतः ।
आदिमोऽपि द्विधा मुख्यगौणभेदात् प्रकीर्तितः ॥८८॥
हंसादयो मता मुख्या गौणा बुद्धादयो मताः ।
अन्तिमोऽपि द्विधा मुख्यगाणभेदादुदीरितः ॥८९॥
तत्र ब्रह्मादयो मुख्या गौणा मन्वादयो मताः ।
अन्तर्यामी द्विधा मूर्त्तामूर्त्तभेदात् प्रभाषितः ॥९०॥

का है ।८६। श्रीव्यासजी एवं श्रीकपिलजी शुद्धावेश अवतार हैं श्रीपरशुरामजी एवं श्रीहयग्रीव आदि अशुद्धावेश अवतार हैं ऐसा विद्वानों ने माना है ।८७। शुद्ध तथा अशुद्ध के भेद से शक्ति के आवेश अवतार को दो प्रकार का माना गया है मुख्य एवं गौण के भेद से शुद्धावतार दो प्रकार का माना गया है ।८८। हंस तथा दत्तात्रय आदि मुख्य माने गये हैं बुद्ध ऋषभदेव आदि गौण माने गये हैं शक्ति के अशुद्ध आवेश को भी मुख्य तथा गौण के भेद से दो प्रकार का माना गया है ।८९। उनमें से ब्रह्म शिव आदि मुख्य हैं ककुत्स्थ मुचुकुन्द अग्नि मनु कुवेर आदि गौण है । मूर्त्त एवं अमूर्त्त के भेद से अन्तर्यामी दो प्रकार का कहा गया है ।९० श्रीवैष्णवों द्वारा श्रीवैष्णवीय विधान से वेद वेदान्तादिविधान से संप्रतिष्ठित अर्चावतार स्वयं व्यक्त दैव सैद्ध एवं मानुष के भेद से चार प्रकार के होते है। इन में स्वयं व्यक्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थापितो वैष्णवैर्मन्त्रैश्चतुर्थाऽर्चावतारकः ।
स्वयं व्यक्तश्च दैवश्च सैद्धश्च मानुषः खलु ॥९१॥"
इति ॥११॥

तत्र परोनाम नित्यधाम्नि श्रीसाकेते जगज्जनन्या श्रीसीताम्बया सह दिव्य सिंहासनोपरिविराजमानोदिव्यायुधालंकारविशिष्टविग्रहशाली नित्यं नित्यमुक्तपरिसेवमानः सर्वावतारी परिपूर्ण ब्रह्म भगवान् श्रीरामः ॥१२॥

जगत् स्रष्टुमुपासितुं च वासुदेव सङ्कर्षण प्रद्युम्ना निरुद्धरूपेण चतुर्थाऽवस्थितो भगवान् श्रीरामोव्यूहः ।१३।

श्रीशालिग्राम श्रीरंगादि है दैव वेणीमाधवादि है सैद्ध श्रीकनक भवनविहारी श्रीबालाजी आदि है, मानुष का ग्रामार्चा गृहार्चा आदि से दो भेद है श्रीबोधायन मतादर्श आदि अन्य शास्त्रों में और भी अनेक भेद उपभेद प्रभेद का बर्णन उपलब्ध होता है जो वहीं द्रष्टव्य है ॥९१॥११॥

भगवान् के उन पांच प्रकार के स्वरूप में से पर नित्य धाम श्रीसाकेत में जगज्जननी श्रीसीतामाताजी के साथ दिव्य सिंहासन के ऊपर विराजमान हैं एवं दिव्य आयुध धनुष बाण एवं दिव्य अलंकारों से समलंकृत दिव्य शरीर वाले तथा नित्य ही नित्य मुक्त जीव श्रीहनुमान आदि से सर्वतोभाव से सेवित सभी अवतारों के मूल कारण रूप अवतारी परात्पर परिपूर्ण ब्रह्म भगवान् श्रीरामजी हैं ॥१२॥

संसार की सृष्टि एवं उपासना आदि कार्यों को सम्पादनार्थ वासुदेव सङ्कर्षण प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध के रूप में चार प्रकार से विभक्त होकर स्थित भगवान् श्रीरामचन्द्रजी व्यूह हैं ॥१३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तत्र वासुदेवे ज्ञान शक्त्यादि गुणषट्कं सङ्कर्षणे ज्ञानबल द्वयं प्रद्युम्ने वीर्यै श्वर्यद्वयमनिरुद्धे च तेजः शक्तिद्वयं वर्त्तते ॥१४॥

मत्स्यादितत्तत्सजातीयरूपेण स्वेच्छयाविर्भूतो भगवान् श्रीरामो विभवः ॥१५॥

योगदृष्ट्यानुभूयमानः सर्वत्र सर्वदा सर्वथा च जीवस्य परमसुहृद्रूपेणहृदयस्थितो भगवान् श्रीरामोऽन्तर्यामी १६

सर्वेश्वर श्रीरामजी के उन चार रूपों में से श्रीवासुदेवजी में ज्ञान शक्ति बल ऐश्वर्य वीर्य एवं तेज छ गुण हैं श्रीसङ्कर्षणजी में ज्ञान एवं बल दो गुण हैं श्रीप्रद्युम्नजी में वीर्य एवं ऐश्वर्य दो गुण हैं श्रीअनिरुद्धजी में तेज एवं शक्ति दो गुण हैं ।१४।

मत्स्य कूर्म आदि उन उन समान जातीय रूप से स्वेच्छा पूर्वक उन उन कार्य का सम्पादन करने के लिये समय समय पर आविर्भूत सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी विभव है ॥१५॥

साधकों द्वारा योग साधना रूप दृष्टि—अन्ताभिमुख ज्ञान रूप दृष्टि से अनुभव किये जाने वाले अनन्या भक्ति से साक्षात् किये जा सकने वाले सभी जगह सर्वदा निश्चित रूप से जीव के परममित्र के रूप में हृदय में स्थित भगवान् श्रीरामजी अन्तर्यामी है ॥१६॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देशकालादिनियमविहीनस्तत्तत्स्थले भक्तताभिमतद्विरण्यादिशरीरेऽप्राकृतशरीर विशिष्टरूपेण वर्तमानः स्नान भोजनादिष्वर्चकायत्ततां गतो मूर्त्तिविशेषरूपो भगवान् श्रीरामोऽर्चावतारः ॥१७॥

उक्तञ्चेश्वरतत्त्वमधिकृत्याचार्यसार्वभौमैरानन्दभाष्यकारैर्भगवद्भिरस्मद्परमगुरुभिः श्रीरामानन्दाचार्यैर्वेदान्तसारे—

देश तथा काल आदि नियमों से रहित उन उन जहाँ तहाँ स्थल विशेष में साधना करने वाले भक्तों से अभिमत रुचि या सामर्थ्य के अनुसार सुवर्ण चांदी पंचधातु या पाषाण प्रभृति के शरीर में अप्राकृतिक दिव्य रूप से स्थित स्नान भोजन शयन परिधान आदि सभी क्रिया कलापों में पुजारी या सेवक के अधीन में रहने वाले मूर्ति के आकृति में अवस्थित भगवान् श्रीरामजी अर्चावतार है ॥१७॥

आचार्य सार्वभौम आनन्दभाष्यकार हमारे दादागुरुजी भगवान् श्रीरामानन्दाचार्यजी ने वेदान्तसार में ईश्वर तत्त्व के विषय में निम्नरूप से निरूपण किया है—

पूर्वोक्त षष्ठ तथा सप्तम श्लोकरूप दो श्लोकों से तत्त्वत्रय के अन्तर्गत चित् स्थूलसूक्ष्म साधाण चेतनवर्ग अर्थात् बद्धमुक्त तथा नित्य सूरिसाधारण जीववर्ग का तथा अचित् जडतत्त्व प्रकृति महदहंकारादिक स्थूल—सूक्ष्म का यथावत् प्रतिपादन करके श्रुति-स्मृति पुराण तथा इतिहास से प्रतिपाद्य सारभूत त्रिरूपात्मक अर्थात् चिदचिद्विशिष्ट तत्त्वशेखर सर्वान्तर्यामी सर्वज्ञ सर्वजगत् कारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"विश्वं जातं यतोऽद्धायदवितमखिलं लीयते यत्र चान्ते

सर्वशेषी भगवान् श्रीसीतापति के स्वरूप तथा गुण के निर्वचन द्वारा निर्वचन करने के लिये चिदचिद्विशिष्ट परमेश्वर मुक्त प्राप्य तथा नित्य सूरियों से सर्वदा दर्शन के योप्य परतत्त्व का उपदेश करने के लिए उपक्रम करते है "विश्वं जातं यतोऽद्धा' इत्यादि अष्टम तथा नवम श्लोक से ।

स्थूल सूक्ष्म साधारण जंगदात्मक सकल जायमान विश्व सर्व शक्ति मान सर्वज्ञ सर्वान्तर्यामी महापुरुष श्रीराम से सर्ग के आदिकाल में उत्पन्न होता है । अर्थात् सर्गादि काल में जिससे आविर्भूत होता है । जिस तरह तिलों से तेल का आविर्भाव होता है । और उत्पन्न होने के वाद जिस परतत्व में अवस्थित रहता है । अर्थात् स्थिति मध्यकाल में जिससे पालित पोषित होता हुआ सर्वदा रक्षित रहता है ।

एवं आविर्भूत तथा रक्षित जगत् संहारकाल में जिस परमतत्त्व में प्रलीयमान हो जाता है । एतादृश जगत् का अभिन्न निमित्तोपादान कारण जो हे वही परमतत्त्व भगवान् का लक्षण है और जिस परमात्मा के प्रकाश से प्रकाशित होकर के दिनमणि सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र तथा अग्निदेव, इस जगत को प्रकाशित करते हैं । तथा जिसके भय से भयभीत होकर के अत्यन्त वेगवान् वायुदेव दिनरात चलते ही रहते हैं । कभी अपने कार्य में आलस्य नहीं करते हैं । तथा जिससे विधारित रहने के कारण पृथिवी स्वकीय स्थान छोड करके रसातल में प्रविष्ट नहीं हो जाती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्योयत्तेजसेन्दुःसकलमविरतं भासयत्येतदेषः ।

और जो परमेश्वर सदा सर्वत्र पर्वत के समान अचल होकर के स्थिर है। अत एव समस्त स्थावर जंगमात्मक जगत् का साक्षी अर्थात् द्रष्टा हैं। और चित् अचित् तथा चिदचिद्विशिष्ट—इन तीनो तत्त्वों में प्रधान है तथा सर्वज्ञत्व शरणागत वत्सलता प्रभृति अनन्त कल्याण गुणों से सर्वदायुक्त रहते है। तथा जो जन्म—मरणादि विकारों से रहित होकर के सम्पूर्ण जगत् का भरणपोषण कर्त्ता हैं। और जनकजा रूपलक्ष्मी से सम्बद्ध है। तथा जगदुत्पादक तथा जगत् संहारक ब्रह्मा रुद्र प्रभृतिक देवों से आराधित रहते हैं। और शरण में आये हुए व्यक्तियों का भेदभाव के विना रक्षण करने में सदा तत्पर रहते हैं। और जिस करुणानिधान के चरणकमल का परम प्रेमारूप भक्ति वाले पुरुष विशेष ही प्राप्त करते हैं। अर्थात् भगवत्प्राप्ति का साधन केवल शुष्क ज्ञान नहीं है। न वा केवल कर्म है। किन्तु ज्ञानकर्म समुचित भक्ति योग सहकृत प्रपत्तिमात्र है। इससे इस बात को अभिव्यक्त किया गया। और भगवान् क्लेशकर्म विपाक और आशयों से अपरामृष्ट है। अत एव महानुभाव भगवान् के यश को श्रीवाल्मीकि प्रभृति महामुनियों के द्वारा लोक में उदीरित है।

और जो ज्ञानी श्रेष्ठ नित्यसूरि श्रीहनुमान् प्रभृतिक महाज्ञानियों के ध्यान का कर्म है। अर्थात् ध्यान का विषय होते हैं। योगियों से ध्येय है। तथा जो भगवान् अजन्मा जन्मरूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यद्भीत्या वाति वातोऽग्निरपि सुतलं याति नैवेश्वरो ज्ञः

भाव विकार से सर्वथा रहित हैं। (दशरथादिकों के कुलों में प्राकृत मनुष्य के समान आद्य क्षण सम्बन्ध जन्म नहीं हुआ है। किन्तु भक्तानुग्रह के लिए आविर्भाव हुआ है। अत एव भक्त प्रवर श्रीतुलसीदासजी ने कहा है, 'रोदन तव ठाना'' इत्यादि। और जिसका जन्म होता है उसका मरण अवश्यं भावी है।

"मृत्यु र्जन्मवतां वीर देहेन सह जायते।
अद्यवाब्दशतान्ते वा मृत्युर्वै प्राणिनां ध्रुवः"

इस प्रमाण से सिद्ध होता है कि जन्मशील का मरण अवश्यं भावी है तथा, "जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः" यह भी प्रमाण है कि जन्मवान् का मरण होता ही है। परन्तु महर्षि श्रीवाल्मीकिजी ने कहा है कि "विवेश वैष्णवं तेजः सशरीरः सहानुजः' (अपने छोटे भाइयों तथा शरीर के साथ–साथ वैष्णव तेज में प्रवेश कर गये।) इस प्रमाण से सिद्ध होता है कि परमेश्वर का मरण नहीं होता है। तब मरण व्याप्त जन्म भी भगवान् का नहीं होता है किन्तु स्वेच्छा से भगवान् का प्रादुर्भाव मात्र होता है। अर्थात् भगवान् का अभिव्यक्त होना ही जन्म कहलाता है।

अत एव मरण रहित होने से जन्मरहित भी हैं। एतावता भगवान् में जन्म मरण एतदुभय राहित्य सूचित किया गया। अर्थात् न तो भगवान् प्राकृत पुरुष की तरह अदृष्टादि रूप कारणों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

साक्षीकूटस्थ एको बहुशुभगुणवानव्ययोविश्वभर्त्ता ॥८॥

से उत्पन्न होते हैं। न वा प्रकृत पदार्थों की तरह आयु समाप्त होने पर अथवा प्रलयकाल में विनष्ट होते हैं। क्योंकि भगवान् कर्माधीन नहीं है अतः उनका शरीर भी कर्माधीन नहीं है। न वा प्राकृत हैं। किन्तु अप्राकृतिक लोकोत्तर निर्मेल ज्ञानानन्द स्वभावक है। भगवान् का वह तादृश शरीर देशकाल तथा वस्तु परिच्छेद होने से उत्पाद विनाशशील नहीं है। अपितु नित्य है। इसलिए भगवान् का जन्म तथा मरण नहीं होता हैं। वह सर्वदा अविनाशी अजन्मा है।

तथा जिस परमेश्वर श्रीसीतानाथ के माहात्म्य महत्त्व का समस्त वेदराशि अर्थात् अंगोपांग पुराणादि सहित वेद समुदाय अनुक्षणगान करते आये हैं। तथा अभी भी गान करते हैं और यावत् काल की सत्ता है तब तक भविष्य काल में भी गान करते रहेंगे। तथा जिस परमेश्वर जगत् कारण के अनन्त समाभ्यधिक विवर्जित ज्ञानादिक स्वाभाविक शक्ति तथा ज्ञानबलवीर्य स्वाभाविक है।

तथा जो भगवान् जरा वृद्धावस्था तथा पाप कर्म कुत्सित शास्त्र प्रतिषिद्ध कर्मों से रहित हैं। सर्वथा विवर्जित हैं। ब्रह्मादिक देव देवों के भी मन तथा वाणी का अविषय हैक्योंकि "यतो वाचो निवर्तन्तेऽप्राप्य मनसा सह" इत्यादि श्रुति समुदाय कहती हैं कि परमेश्वर मन वाणी के व्यापार का विषय नहीं होता है। इससे सिद्ध होता है कि परमेश्वर वाङ्मनसातीत है। ऐसा जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरुष विशेष है जो कि सकल वसुधाधिप होने पर भी अयोध्या धिपति हैं वही भगवान् श्रीसीतारामजी सकल जगत् का कारण सर्व नियामक सर्वशेषी परमेश्वर हैं । इस प्रकार से भगवान् श्रीरामान न्दाचार्यजी ने श्रीसुरसुरानन्दाचार्यजी को परमतत्त्व ज्ञेय ध्येय तथा प्राप्य के स्वरूप का निर्वचन करके समझांया । ऐसा इन दोनों श्लोकों का अन्वयार्थ हुआ । इसके पूर्व में तत्त्वत्रयान्तर्गत चित् अथा अचेतन जीव प्रकृति रूप दो तत्त्वों का निरूपण किया गया है । इसके वाद जड चेतन का धारक सर्व नियामक सर्वशेषी सर्वज्ञत्व सर्वशक्तित्वादिक सकल कल्याण गुणों का आकर समाम्य धिक विवर्जित सकल शास्त्र विहित कर्म के द्वारा आराध्य सकल कर्मफल प्रदाता योगिगम्य तथा ज्ञेय मुक्त प्राप्य समस्त वेदान्त गम्य पुरुषोत्तम मर्यादा के सागर तत्त्वत्रयों में तत्त्वशेखर ईश्वरतत्त्व सर्वेश्वर श्रीसीतापति रूप परमेश्वर का निरूपण करने के लिए उप-क्रम करते हैं "विश्वं जातं यतोऽद्धा" इत्यादि श्लोक द्वयसे ।

जिस सर्वशक्ति सर्वज्ञ सर्वान्तर्यामी सर्वशेषी सर्वेश्वर श्रीसीता रामजी से यह परिदृश्यमान स्थूल जड चेतन जगत् प्रलयावसान काल में अर्थात् सर्गकाल में उत्पन्न होता है । तथा स्थिति काल में भगवान् से पालित होता है तथा अवसान में अर्थात् प्रलय काल में जिस परमात्मा में लीन हो जाता है वही परमेश्वर भगवान् श्रीरामचन्द्रजी हैं । इस श्लोक के प्रथम चरण से आचार्य श्री ने ईश्वर में जगत्कारणता का प्रदर्शन कराया है । कारण दो प्रकार का होता है निमित्तकारण तथा उपादानकारण–उसमें से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDE

चैतन्य मूलक निमित्तकारण अर्थात् कर्तृत्व ईश्वर में बतलाया तथा सर्वशरीरक भगवान् में उत्पत्ति स्थिति प्रलय भगवान् से होता है यह कह करके उपादान कारणत्व का सूचन किया है। क्योंकि घटादि कार्यों का उत्पाद स्थिति और विनाश ये तीनों उपादान कारण मृत्तिका में ही होता है। केवल पदार्थों का उत्पादन तो कर्त्ता कारण तथा सहकारी कारण से भी होता है। जैसे घटादि का उत्पादन कुलाल तथा दण्डादि सहकारी से भी होता है। परन्तु उत्पाद स्थिति विनाश तो उपादानमें ही होता है। ऐसा ही लोक में देखा जाता है। न तु मृत्तिका से घट का उत्पाद हो, कारण से मृदतिरिक्त में घट का अवस्थान हो तथा मृदतिरिक्त जलादिक में प्रलीयमान होता हो। किन्तु मृत्तिका ही में उत्पादादिक सब होता है। इसलिए उत्पादस्थित्यादिक मृत्तिका ही में होने से मृत्तिका घट का उपादान सिद्ध होता है। इसी तरह जगत् का उत्पाद स्थिति विनाश जिस से होता है वही परमेश्वर है ऐसा कहकर जगदाचार्यजीने बतलाया कि भगवान् से जगत् का उत्पाद स्थिति विनाश है।

इस विषय का समर्थन श्रुति भी करती है, "सदेव सोम्येदमग्रे आसीदेकमेवाद्वितीयं ब्रह्म" "आत्मा वा इदमेकमग्रे आसीन्नान्यत् किञ्चनमिषत्" (यह परिदृश्यमान जगत् उत्पत्ति के पूर्व एक अद्वितीय सजातीय विजातीय रहित ब्रह्म रूप ही था। उत्पत्ति के पूर्व में समाभ्यधिक विवर्जित आत्मा मात्र था। तदतिरिक्त अर्थात् भगवत् स्वरूप व्यतिरिक्त क्रियाशील कोई भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पदार्थ नहीं था ।) इत्यादि श्रुतियों से सर्गपूर्व में सत् आत्मादि पदों के द्वारा सदाद्यात्मक ईश्वर सत्ता का प्रतिपादन करके पुनः श्रुति कहती है, "यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येनम जातानि जीवन्ति यत्प्रयत्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्म" (जिस सर्वशक्ति समन्वित सदात्मक सर्वशेषी परमेश्वर रूप कारण से प्रलयावस्था में प्रसुप्त के समान यह परिदृश्यमान जगत् जायमान होता है । अर्थात् रात्रि में नीड निविष्ट पक्षीगण जिस तरह रात्रि के व्यतीत हो जाने पर प्रभात समय में नीडों से अभिव्यक्त होते हैं । यथा वा तिलों से जिस तरह तेल कारक व्यापार से अभिव्यक्त होता है । उसी तरह यह जगत् जिससे सर्गावस्था में क्रमिक अभिव्यक्त होता है तथा अभिव्यक्त होकर के स्थिति अवस्था में जिससे पालित पोषित होता है, एवं संहारावस्था में जिसमें विनष्ट हो जाता है अर्थात् तिरोहित हो जाता है, यह जगत् वही ब्रह्म स्वरूप हैं । तादृश जगत् कारणीभूत ईश्वर की जिज्ञासा करो । इन उपर्युक्त श्रुतियों से सिद्ध होता है । इस विषय का स्मृत्यादिक ग्रन्थों से भी स्पष्टीकरण होता है । तथाहि—

"यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादि युगागमे ।
यस्मिंश्चप्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥"

"यतः सर्वाणि भूतानि प्रभवन्त्यहरागमे ।
रात्रागमे प्रलीयन्ते यत्रैवाव्यक्त संज्ञके" इति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात आदि युग सर्ग के आदि काल में जिस सर्वशक्ति समन्वित परमात्मा से ये सब भूत अर्थात् जड चेतन साधारण सकल स्थूल पदार्थ आविर्भूत होते है। इन सब पदार्थों का आविर्भाव होता है। तथा पुनः कल्प के विरामकाल में जिस परमात्मतत्व में प्रलय तिरोभाव को प्राप्त कर जाते हैं वह ईश्वर है। दिन के प्रारम्भ काल में सभी भूत जिस परमेश्वर से अभिव्यक्त होते हैं रात्र्यागय– कल्पक्षय काल में जिसमें तिरोभूत हो जाते है वह परमेश्वर है। इन स्मृतियों से सिद्ध होता है कि भूतों का उत्पाद विनाश तथा पालन परमात्मा से ही होता है। इस बात को प्रथम चरण से बतलाया हैं।

"सूर्योयत्तजसेन्दुः सकलमविरत भासयत्येतदेषः"

सूर्य तथा चन्द्रमा ग्रहनक्षत्रादिक तैजस पदार्थ जिस भगवान् के प्रकाश से प्रकाशित होकर के इस जगत् को प्रकाशित करते हैं अर्थात् सूर्यादिक देव भगवान् के प्रकाश से स्वयं प्रकाशित होकर के तब अपने अपने प्रकाशों से सूर्यादिक देव चराचर सकल जगत् को प्रकाशित करते हैं। न तु सूर्यादिको में पर प्रकाशकत्व सामर्थ्य स्वाभाविक है किन्तु परोपाधिक हैं। वह ईश्वर है।

परमेश्वर से प्रकाशित होकर के सूर्यादिक जगत् को प्रकाशित करते हैं इस विषय का पुष्टीकरण श्रुती करती है, "न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकं नेमा विद्युतोभांति कुतोऽयमग्निः। तमेव भान्तमनुभाष्तिसर्वं तस्य भासा जगदिदं विभाति।" इति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् तत्र उस परमात्मा में सूर्य प्रकाशित नहीं होते हैं। अर्थात् सूर्य के प्रकाश से परमात्मा प्रकाशित नहीं होते हैं। तथा चन्द्रमा और तारागण भी अपने प्रकाश से परमात्मा को प्रकाशित नहीं कर सकते हैं। तथा विद्युत के प्रकाश से भी परमात्मा का प्रकाश नहीं होता है। ये जो भौम काष्ठादिगत अग्नि है इसकी तो गणना ही क्या है। किन्तु उस परमात्मा के प्रकाशित होने पर ही सभी पदार्थ सूर्यादिक अनुभासित होते हैं। परमात्मा के प्रकाश से ही सारी दुनिया प्रकाशित होती है। अर्थात् प्रकाश रूप धर्म परमात्मा में ही है। तदितर सूर्यादिक में जो देखने में आता है वह परमात्मा की कृपा से ही प्राप्त हुआ है। इसलिए सूर्यादिक के प्रकाश से परमात्मा प्रकाशित नहीं होते हैं। किन्तु परमात्मा के प्रकाश से सब प्रकाशित होते हैं। इसलिए आचार्य श्री ने कहा कि "सूर्योयत्तेजसेन्दु:" इत्यादि।

इसी प्रकार स्मृति भी कहती है कि परमात्मा के प्रकाश का आश्रय लेकर ही सूर्यादिक प्रकाशक कहलाते हैं। तथाहि—

"यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौतत्तेजो विद्धिमामकम्॥" इति।

आदित्य सूर्य में रहने वाला जो प्रकाश सकल जगत् को प्रकाशित करती है। तथा चन्द्रमा में, विद्युत में और अग्नि में रहने वाला जो प्रकाश समस्त जगत् स्थित पदार्थ को प्रकाशित करता है हे अर्जुन! वह विलक्षण प्रकाश मेरा ही है अर्थात् वह प्रकाश परमात्मा का प्रकाश है। पर आदित्य चन्द्रमा प्रभृति का नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है । एतादृश गुणगण विशिष्ट जो है वह परमात्मा है । यही ब्रह्म का लक्षण है ।

इतना ही नहीं कि सर्वेश्वर श्रीरामचन्द्रजी जगत् का कारण हैं तथा सर्व प्रकाशक है किन्तु स्व स्व अधिकारों में परमात्मा से नियुक्त जो वायु इन्द्रादिक पुरुष हैं वे सब जिसके भय से भयभीत होकर के अपने अपने अधिकार कार्य में सर्वदा संलग्न रहते हैं इस बातको आचार्य जी कहते हैं "यद्भीत्यावाति वातः" इत्यादि । जिस परमात्मा के भय से स्वकीय अधिकार में नियुक्त वायुदेव जो कि जगत् के आयुरूप हैं ऐसा कहा है । इसरीति से सम्पूर्ण जगत् के प्राण रूप परमपुरुष वायु देव देवमनुष्यतिर्यक् प्रभृतिक प्राण समूह में श्वासोच्छास रूप से संचरित होते रहते हैं । यह वायु दो प्रकार का होता हैं—बाह्य तथा आभ्यन्तर । इसमें शरीराभ्यन्तर संचरणशील वायु को प्राण कहते हैं । तथा बाहर में संचरणशील वायु को प्रकंपन महावात प्रभृतिक नाम से कथित होता है । इस प्रकार के ये वायु जिसके भय से अतन्द्रित होकर के अपना कार्य करते हैं । श्रुति भी कहती है—

"भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्यः,
भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः"

अर्थात् सकल जगत् का जो नियामक हैं परमेश्वर ब्रह्माख्य श्रीराम उनके भय से अग्निदेव स्वकीय तपन क्रिया में संलग्न रहते हैं । तथा उस परमेश्वर के भय से भयभीत होकर के सूर्य तपन प्रकाशन कार्य को करते हैं । तथा उस परमेश्वर के भय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सेन्ही इन्द्रवर्षणाधिपति वर्षण कार्य को तथा वायु स्वकीय कार्य में संलग्न रहते हैं। और क्या ! यह जो मृत्यु यमराज है जो कि प्रजामात्र का संहारकारक है वह भी जिसके भय से भयभीत हो कर के स्वकीय अधिकार प्राप्त संहार कार्य में सर्वदैव संलग्न रहता है उस कार्य में थोडा भी आलस्य नहीं करता हैं। इस श्रुति प्रतिपादित अर्थ को बतलाते हुए कहा—"यद्भीत्यावातिवातः" इति ।

"अवनिरपि सुतलं यातिनैवेति" जिस परमात्मा के भय से डरकर के पृथिवी सर्व जड चेतन का आधार रूपास्थिरा पृथिवी सुतल=रसातल में प्रवेश नहीं करती है। अथवा जिस परमेश्वर से अधिष्ठित=धारित होने के कारण पृथिवी स्वस्थान से विचलित होकर के रसातल में प्रवेश नहीं करती है।

"एतस्याक्षरस्य प्रशासने द्यावा पृथिवी विधृते तिष्ठतः"

अर्थात् इस अक्षर महापुरुष के प्रशासन में व्यवस्थित द्यु पृथिव्यादिक यथा स्थान में आधारित रहते हैं। स्वस्थान से कभी भी विचलित नहीं होते हैं। इससे ईश्वर में सर्वधारकत्व का कथन किया गया है।

एतादृश गुणविशिष्ट परमेश्वर पुन किस प्रकार के हैं। इस प्रश्न के उत्तर में कहते है "ज्ञः" एतादृश परमेश्वर पुनः 'ज्ञ' रूप है। अर्थात् त्रिकाल स्थित सभी जड चेतन पदार्थ को जाननेवाला जो ज्ञान स्व प्रकाश है तादृश ज्ञान स्वरूप तथा तादृश ज्ञान का अधिकरण हैं। इसलिए ज्ञाता सर्वज्ञ सर्ववित् है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ब्रह्म) के व्यतिरिक स्वभाव, प्रयत्न मन ही हो सकता है। अतः विनिग्रह का विषय साक्षात् मन ही है न कि मनन का विषय विशेष कोई विषय वस्तु। 'बाह्य पदार्थेभ्यो मनोनिरोधः' का तात्पर्य 'पराञ्चिखानि व्यतृणत्स्वयंभू स्तस्मात्पराङ् पश्यति नान्तरात्मन्। कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्त चक्षुरमृतत्व-मिच्छन् ॥कठ २।१।११, श्रुति वाक्य है। एवं 'यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गने सोमपा स्मृता। योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥६।१७॥ यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्। ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥६।२६। गीता वाक्य है।

इसप्रकार दोनों आचार्यों में सिद्धान्त विरोध है श्रीरामानन्दा चार्यजी अमानित्व आदि पदों को पूर्ण गुण वाचकता के साथ व्यापक रूप में सामान्य अर्थ में प्रयुक्त मानते हैं और श्रीरामा-नुजाचार्यजी व्याप्य रूप में विशेष अर्थ में अल्पगुण वाचकता के अर्थ में। यह दोनों में सिद्धान्त विरोध है।

॥ नीतिधर्मोपदेश ॥

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य श्रीरघुवराचार्यजी

नक्षत्रभूषणं चन्द्रो नारीणां भूषणं पतिः।
पृथिवीभूषणं राजा विद्या सर्वस्य भूषणम् ॥

नक्षत्रों का भूषण चन्द्र है स्त्रीयों का भूषण उनका पति है, पृथिवी का भूषण राजा है और विद्या सबका भूषण है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक मनुष्यको विद्या सुयोभित बना देती है।

सकृत् दुष्टं च मित्रं यः पुनः सन्ध्यातुमिच्छति।
समृत्युमुपगृह्णाति गर्भमश्वतरी तथा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

जो मनुष्य एक वार दोषयुक्त हुए मित्र के साथ फिर से मैत्री का संधान करता हैं । वह अपने मृत्यु को स्वयं स्वीकार करता है जिस प्रकार खच्पर स्त्री शर्म धारण करके अपनी मृत्यु स्वीकारती है ।

हस्ती हस्त सहस्त्रेण शतहस्तेन. वाजिनः ।
शृंगिणो दशहस्तेन स्थानत्यागेन दुर्जनः ॥

हाथी को सहस्त्र हाथ से त्यागना चाहिये घोडा को सौहाथ दूर से सींगवाले प्राणीयों को दशहाथ दूर से और दुर्जन मनुष्य को अपने स्थान त्याग करके भी दूर छोडना चाहिये ॥

परदारं परद्रव्यं परीवादं परस्य च ।
परिहासं गुरोः स्थाने चापल्यं च विवर्जयेत् ॥

परकीय स्त्री, परद्रव्य दूसरे किसी की निन्दा तथा परिहास और गुरु माता पिता आदि पूज्यों के सामने किसी प्रकार की चपलता इन कार्यों को सर्वथा छोड देना चाहिये ।

शरीर निरपेक्षस्य दक्षस्य व्यवसायिनः ।
उद्धिग्रारब्धकार्यस्य नास्ति किंचन दुष्करम् ॥

जो मनुष्य अपने शरीर मिटाने को स्पृहा नहीं करता चतुर और अनेक प्रकार के व्यवसाय को जानता और करता है एवं किसी भी काम का ज्ञान पूर्वक आरम्भ करता है ऐसे मनुष्य के लिए दुष्कर कोई कार्य नहीं है ।

श्रीरामानन्दाचार्यपीठश्रीशेषमठके धर्मप्रचारविभागसेधर्मप्रचारार्थप्रकाशित
मुद्रक-श्रीआनन्दभाष्यमुद्रणालय
आचार्यपीठ
श्रीकोयलेन्द्रमठ पो. पालडी, अहमदाबाद-३८०००७
पे. सं. प्रति श्री.....

३९७ पुस्तकालय वाल्मीकि अध्ययन संस्थान काठमाण्डू नेपाल
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu